अप्रैल 2025 रु.20/-

गाँव गिराँव

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

बदलता समाज

बदलते रिश्ते

मोहन मेमोरियल प्रयाग महाविद्यालय
मझौली, झारोकलां, दुद्धी–सोनभद्र उ0प्र0
उ0प्र0 मे सबसे कम शुल्क मे
D.El.Ed. B.T.C.
छात्रवृत्ति की सुविधा
बस सेवा निःशुल्क (रेनूकूट म्योरपुर, विण्ढमगंज से)
लाइब्रेरी सुविधा निःशुल्क
प्रवेश प्रारम्भ 2024-25
शिक्षक बनने का मौका हाथ से जाने ना दें
ADDMISSION OPEN
Approved by NCTE (New Delhi) &
Affilated by SCERT (Uttar Pradesh)
Contact No. 9936916999, 6387474428, 9517102973

taste
king
Family Restaurant
MINT HOUSE, CANTT, VARANASI
Call : 09115006786, 08429751545, 07317593554

गाँव गिराँव

वर्ष : 14, अंक : 05, अप्रैल 2025, पृष्ठ 44, मूल्य : 20/-

सलाहकार सम्पादक - क्रान्तिक इन्द्रजीत
सम्पादक - श्रीधर द्विवेदी
समाचार सम्पादक - डॉ. पंकज कुमार ओझा
प्रबन्ध सम्पादक - गुरु प्रसाद शुक्ल
सहायक सम्पादक - कमलेश पाण्डेय, रविन्द्र प्रताप सिंह गोपाल मौर्य
उप सम्पादक - वीरेन्द्र कुमार विन्द, नागेश्वर सिंह, रामप्रसाद यादव
विज्ञापन प्रबन्धक - उमेश चन्द जैन
डिजिटल एग्जिक्यूटिव - इ. अमित पटेल
लेआउट व डिजाइन - मंजीत कुमार

राज्य प्रभारी - दिल्ली - यश सिंह 8882678591
चंडीगढ़ - ओ.पी. राय 8009069795
लुधियाना - गुरदीप सिंह-9815453958
पटना - अमित मिश्रा- 9263056540
पूर्वी उ0प्र0 - प्रदीप राय- 8546055042
पश्चिमी उ0प्र0- अनिल कुमार बाजपेयी-8052159000
लखनऊ - डा. विजयकांत पाण्डेय - 8795506060
प्रयागराज- मनोज पाण्डेय - 9140410568
मिर्जापुर - राजेश कुमार मिश्र- 6393139610
म0प्र0 - प्रहलाद पटेल - 7566126043
रीवा- नन्दलाल पाण्डेय- 9981962439

विशेष प्रतिनिधि- अरविन्द सिंह (वाराणसी) 9919442266
कालीदास त्रिपाठी (चन्दौली) 9838454120, महेन्द्र गांधी (सोनभद्र) -9415874679, ओमकार नाथ- 9415698795, अशोक जायसवाल - 9451891800, मनोज यादव- 9598155820

कार्पोरेट आफिस

गाँव गिराँव मीडिया प्रा0लि0
मिथिलेश कुमार (ब्यूरो चीफ)
सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर
उत्तर प्रदेश पिन-201309
मो0 - 9811191393, 9910768136
ई-मेल – gaongiraw@gmail.com
बेवसाइट - www.gaongiraw.in

मुम्बई ब्यूरो- 704/25 सोनम मारी गोल्ड, राम मन्दिर के पास, ओल्ड गोल्डेन नेस्ट-3 मीरा भयन्दर रोड भयन्दर, (ईस्ट) थाणे महाराष्ट्र-401105
8850955358, 9930046946

हेड ऑफिस पत्राचार- 13, दीपशिखा अपार्टमेंट गांधीनगर, सिगरा, वाराणसी, उप्र-221010
मो.- 9450825966, 7525825966

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीधर द्विवेदी द्वारा युग सत्य प्रिंटिंग प्रेस, शिवपुर वाराणसी उ0प्र0 से मुद्रित व शि.15/137 भरलाई शिवपुर, वाराणसी (उ0प्र0) 221009 से प्रकाशित।

RNI No - UPHIN/2012/41296

नोट- पत्रिका में प्रकाशित लेख, विचार लेखकों के अपने हैं, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में दिये गये पद अवैतनिक हैं। समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र वाराणसी न्यायालय क्षेत्र में ही मान्य होगा।

भीतर के पन्नों पर

विचार बिन्दु :
नकली दवाओं, मिलावटी खाद्य पदार्थों ... 2

कवर स्टोरी :
बदल रही रिश्तों की परिभाषा 3-5
टूटते रिश्तों की बीच भारतीय समाज 6-7

साइबर वार
साइबर सुरक्षा हेतु पासवर्ड 8

साहित्य
कहानी- 1. खुल जा सिमसिम 9-11
2. गांधी धुन 12-14
व्यंग्य- खेद है 15-16

कविता
वेद मिश्र की कविताएं 17
छवि पर पांच कविताएं 18
केवल कृष्ण पाठक की दो कविताएं 19

पुस्तक समीक्षा
मुस्लिम विमर्श! मगर अधूरा 20-22

छत्तीसगढ़
एनटीपीसी की 800 मेगावाट 23
बालको- महिलाओं का सम्मान 24-25

खबरें
इफको - एमडी का सम्मान 26

पर्यटन
ब्लू सिटी ऑफ इण्डिया 27

ब्यूटी टिप्स
अदरक से पाएं निखरी त्वचा 28

खेती बाड़ी
खेत से थाली तक... 29-30
किसानों के लिए डिजिटल तकनीक 31-32

स्मृति शेष 33-35

ज्योतिष 36

धर्म-कर्म
जीवन में आध्यात्म 37-38

खेल-खिलाड़ी 39

सिने-जगत 40

पाठकों से– पत्रिका के लिए आपके प्रतिक्रिया, सुझाव, विचार आमंत्रित हैं। ई मेल–gaongiraw@gmail.com पर भेजें। – सम्पादक

नकली दवाओं, मिलावटी खाद्य पदार्थों पर अंकुश के लिए कड़े कानून की जरूरत

हिमाचल प्रदेश में संचालित दवा कम्पनियों के सैकड़ों नमूने फेल होना इस बात का सबूत है कि ये दवाएं जीवन के लिए घातक होगी और इनका बाजार में होना संज्ञेय अपराध है। समय-समय पर देश में ऐसे अनेक फार्मा कम्पनियों के नमूने फेल होने की खबरें आती रहती हैं। इससे स्पष्ट है कि बाजार में ऐसी दवाओं की भरमार है। जीडीपी का एक बड़ा हिस्सा जीवन रक्षक दवाओं का है जिसे आम आदमी चुकाता है।नकली दवाओं का जितना बड़ा नेटवर्क है उससे उतने ही बड़े ओहदे भी जुड़े हैं जिससे उनको संरक्षण प्राप्त होता है।

नकली दवाओं, खाद्य पदार्थों के प्रतिष्ठानों पर कभी कभी जब जॉच टीम जब पहुंचती है तो बाजार धड़ाधड़ बन्द हो जाता है क्योंकि अविश्वास, असमंजस में व्यापारी भी होता है कि उसके दुकान में सामान असली है या नकली। उसके पास से लिए गए नमूने की जांच होती है तो वही फॅस जाता है। जबकि यह बड़े मगरमच्छों का खेल है।

वैसे तो खाद्य सुरक्षा विभाग हॉथी के दॉत की तरह कभी कभी खाना पूर्ति के लिए निकलता है खास कर त्यौहारों के समय। सेंपल का रिजल्ट आते आते माल बिक जाता है। सरकार भी इस खेल में गम्भीर नहीं है जबकि इसके लिए कड़े क़ानून और निरन्तर सक्रिय रहने वाले विभागों की आवश्यकता है। अविश्वास का बाजार बढ़ता जा रहा है। जिन दवाओं के नमूने फेल हो रहे हैं उसमें एलोपैथिक, आयुर्वेद, होम्योपैथी सामिल है। यह केवल एक राज्य में नहीं बल्कि पूरे देश और विदेशों से आ रही बस्तुओं के साथ भी है। नामचीन कम्पनियों के रैपर्स, मिलते-जुलते नाम सब प्रयोग किया जा रहा है। दवाओं के ब्लैक मार्केट में तो हास्पिटल, डाक्टर सबकी मिलीभगत है।

इनको बढ़ावा देने की मंशा सरकार की भले न हो मगर आंख मूंद लेना भी कम अपराध नहीं है। देश, विदेश से निर्मित किसी भी दवा, खाद्य पदार्थ की जांच किए बिना मार्केट तक पहुंचाना भी सरकार की नाकामी है। मानव जीवन के साथ खेलवाड़ के दोषियों के विरुद्ध कड़े कानून की आवश्यकता है। सरकार और न्यायपालिका को इस पर गम्भीर निर्णय करना होगा। मार्केट को जहर से पाटने वालों के खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास जैसे कठोर दण्ड का प्रावधान किया जाना चाहिए। मिलावटी सामान, नकली दवाइयां जहर के ही समान है जो जीवन को नष्ट कर देती हैं। केन्द्र सरकार के अधीन पूरे देश में अलग से एजेंसी का गठन होना चाहिए जो केवल बाजारों पर नजर रखे और नकली, मिलावटी सामानों की निगरानी कर सजा दिलाने के लिए काम करे।

सरकार भी इस खेल में गम्भीर नहीं है जबकि इसके लिए कड़े क़ानून और निरन्तर सक्रिय रहने वाले विभागों की आवश्यकता है। अविश्वास का बाजार बढ़ता जा रहा है। जिन दवाओं के नमूने फेल हो रहे हैं उसमें एलोपैथिक, आयुर्वेद, होम्योपैथी सामिल है। यह केवल एक राज्य में नहीं बल्कि पूरे देश और विदेशों से आ रही बस्तुओं के साथ भी है। नामचीन कम्पनियों के रैपर्स, मिलते-जुलते नाम सब प्रयोग किया जा रहा है। दवाओं के ब्लैक मार्केट में तो हास्पिटल, डाक्टर सबकी मिलीभगत है।

बदल रही है रिश्तों की परिभाषा

–हर्षवर्धन

(70 के दशक में पारिवारिक विघटन की परिघटनाएँ चिह्नित की गई थीं। एकल परिवार बनने लगे थे और संयुक्त परिवार टूटने लगे थे। यह सिलसिला लम्बे समय तक चला और लगभग एकल परिवार स्थापित हुए। आज के दौर में एकल परिवारों में संबंधों की परिभाषा बदल रही है। कुछ लोग उसे टूटते रिश्ते की संज्ञा दे रहे हैं और कुछ इसे अलग रूप में देख रहे हैं। प्रस्तुत है हर्षवर्धन का सामाजिक विश्लेषण –सं.)

स्त्री शिक्षा

नये दौर में रिश्ते पुनर्परिभाषित हुए हैं। यानि कि उन्हें उसी रूप में नहीं देख सकते जिसे पारंपरिक कहा जाये। इसके कई कारण हैं। इसमें से एक कारण है– स्त्री शिक्षा। स्त्री शिक्षा समाज के नये आयाम का बड़ा कारण है। इससे रिश्तों की नई परिभाषा कायम हो रही है। स्त्री का स्वावलम्बन इसके तमाम कारणों में एक है।

पारंपरिक परिवारों में स्त्री की स्थिति आज से अलग थी। उसके भीतर स्वतंत्रता की कोई माँग नहीं थी। वह पुरुष की पराधीनता स्वीकारती थी और कोई स्वतंत्र आकांक्षा नहीं रखती थी। स्त्री शिक्षा के कारण उसके अन्दर स्वतंत्रता की स्थिति उत्पन्न हुई है। उसकी चाह अधिक स्वतंत्रता, अधिक अधिकार, अधिक अवकाश की है। इससे संबंधों के पारंपरिक ढाँचों पर प्रभाव पड़ा है। पारिवारिक निर्णयों में न केवल उसका हस्तक्षेप बढ़ा है, अपितु वह प्रभावी भी हुआ है।

स्त्री शिक्षा के कारण लड़कियाँ घर से दूर जाकर पढ़ने लगी हैं। वह घर से दूर हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करते हुए अपने संबंधों का स्वतंत्र निर्माण कर रही है। पिछले समय के आधार पर यही सोचना मुश्किल है कि लड़की घर के बाहर अपने संरक्षकों से दूर रह सकती है। शिक्षा के कारण यह स्थिति संभव हुई है और स्त्रियों के सोचने का तरीका बदला है। इस बदलाव में घरेलू संबंधों पर एक अलग तरह का असर पड़ा है। यहाँ तक कि माँ और बेटी के रिश्ते भी बदले हैं। पिता और पुत्र के रिश्ते भी

बदले हैं।

एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि पुत्र माँ से ज्यादा अटैच होते हैं और माँ की ज्यादा सुनते हैं। माँ के स्वावलंबी होने की स्थिति में संबंधों की यह तीव्रता और बढ़ जाती है। आर्थिक संबंध के कारण पिता का महत्व पिछले समाजों में ज्यादा था, अब वैसा नहीं है।

उपभोक्तावाद

उपभोक्तावाद सामाजिक संबंधों को बहुत तरह से प्रभावित कर रहा है। परिवार के आर्थिक निर्णय उपभोक्तावाद के दबाव में लिए जा रहे हैं। धन की सीमा का ध्यान रखे बिना उपभोग की माँग बढ़ी है। पत्नी, बच्चे सभी उपभोक्तावादी माँग करने की स्थिति में हैं। ब्राण्डेड वस्तुओं की इच्छा प्रबल हुई है। हर किसी को जूता, वस्त्र, टी.वी., फ्रिज, आईफोन आदि ब्राण्डेड चाहिए। बाजार नये-नये ब्राण्ड लेकर आ रहा है और विज्ञापन के जरिए लोगों में लालच पनपा रहा है। स्त्रियाँ नये-नये गहनों की माँग कर रही हैं और तनिष्क आदि कम्पनियाँ इनको बढ़ावा दे रही हैं।

परिवार के सदस्यों की माँग के दबाव में रिश्ते यांत्रिक होते जा रहे हैं और उनके न पूरा होने की स्थिति में टूट रहे हैं। घर के संरक्षक की आमदनी की सीमा है और यह सीमा उपभोक्तावादी मन स्वीकार नहीं कर रहा है। भारतीय समाज की यह एक बड़ी सच्चाई है।

बाजार नये-नये त्यौहार परिभाषित कर रहा है और पारंपरिक त्यौहारों को नये कलेवर दे रहा है। उदाहरण के लिए अक्षय तृतीया का पर्व अचानक महत्वपूर्ण हो गया है। इस दिन गहनों की खरीद जैसे अनिवार्य हो गई है और उसे धार्मिक महत्व से जोड़ दिया गया है। इसमें बाजार का साथ सत्ता और धार्मिक संस्थान दोनों दे रहे हैं। ज्योतिषी गहने की खरीद का महत्व समझाने लगे हैं। ये सब नयी परिघटनाएँ हैं, जिनसे प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हुआ है।

उपभोक्तावाद का वर्चस्व दिनोंदिन बढ़ता गया है और बाजार की उत्पादित वस्तुएँ स्टेटस सिम्बल के रूप में स्वीकृत हो चुकी हैं। अमीरी के प्रतीकवाद में अनेक गृहस्थियों को कर्ज के भँवर में ढकेल दिया है और व्यक्ति की निजता के साथ-साथ पारिवारिक रिश्ते प्रभावित हुए हैं। सादा जीवन, उच्च विचार का सिद्धान्त टूट गया है, जिसका परिणाम है कि हिंसा बढ़ी है। समाज की रंग पहले से ज्यादा गाढ़ा हो गया है।

सामाजिक रीति-रिवाज और रश्में उपभोक्तावाद के दबाव में देखी जा रही हैं। विवाह-शादी अब पारंपरिक ढर्रे की नहीं रह गई है। उनके भीतर अनेक कार्यक्रम इस तरह जोड़ दिए गए हैं जो पहले नहीं थे। लड़कियाँ खुद दहेज देने के लिए पिता पर दबाव बना रही हैं। खुलापन बढ़ने के साथ-साथ यह सब हुआ है। कम-से-कम मध्य वर्ग में कन्या की माँग यह है कि उनके माँ-बाप उनका घर बसा कर दे दें ताकि वे अपने पति के साथ अलग रह सकें। वे फ्लैट, गाड़ी और अन्य जरूरी चीजों के लिए माता-पिता पर दबाव बनाने लगी हैं।

उपभोक्तावाद का दबाव समाज के मन पर बहुत गहरे तक पड़ा है। एक नया मानस यह बना रहा है। एक तरह से यह नया आदमी ऐसा आदमी गढ़ रहा है, जो समाज में होकर भी सामाजिक न रहे। सामाजिक सरोकार से दूर रहे और अधिक से अधिक उपभोग को बढ़ावा देने वाला हो।

जीवन जीने का बढ़ता खर्च

पारिवारिक स्थिति को बदलने में जीवन जीने की बढ़ते खर्च का बहुत हाथ है। इसके दो कारण हैं– पहला उपभोक्तावाद जो आदमी की रुचि को अधिक खर्च के लिए उकसाता है और दूसरा महँगाई। स्थिर मूल्य सरकार की नीतियों के जरिए प्राप्त होता है। बाजार की अस्थिरता महँगाई बढ़ाती है, जिससे जीने का खर्च बढ़ता है। आय-वृद्धि अर्थात् प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के बिना जब उसका खर्च बढ़ता है तो उसके ऊपर एक ऐसा दबाव पड़ता है, जिससे उसकी उदारता कम होती है।

उपभोक्तावाद सरकार के कंधों पर चढ़कर अपना फैलाव करता है। वर्तमान सत्ता से वह गठजोड़ करता है और पारिवारिक जीवन तक पहुँच कर उसे प्रभावित करता है। इधर 10 वर्षों में ऐसे तमाम खर्च बढ़े हैं, जो पहले नहीं थे। निःसंदेह महँगाई बढ़ी है और चीजों के मूल्य में वृद्धि हुई है। बाजार प्रसाधन सामग्रियों से पटे हैं और उन्हें खरीदने की होड़ मची है। ये वे चीजें हैं जो जरूरी नहीं हैं फिर भी उन्हें खरीदना जरूरी बना दिया गया है। यह मनोवैज्ञानिक हमला है जो बाजार की ओर से लगातार बढ़ रहा है। इस विषय को बहुत विस्तार से कहा जा

सकता है पर इतना संकेत काफी है कि विज्ञापन के उपकरण द्वारा तमाम गैर जरूरी चीजें जरूरत की बना दी गई हैं। शिक्षा का खर्च बढ़ा है। यह जरूरी खर्च है और इस पर सरकारी नियंत्रण नहीं रहने से इसका खर्च उठाना निम्न-मध्यम वर्गीय लोगों के लिए मुश्किल हो गया है। इसका कारण शिक्षा का बाजारीकरण है और सरकारी संस्थानों का पलायन है।

शिक्षा की जरूरत समाज-निर्माण की सबसे बुनियादी जरूरत है लेकिन स्थलीय टी.वी. की जगह सेटेलाइट टी.वी.? यह क्या है? खाने-पीने की शैली में बदलाव के पीछे बाजार का कितना हाथ है, यह सोचने की जरूरत है। संरक्षक जो अकेले कमाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करना चाहता है, वह इतनी इच्छाओं का बोझ नहीं ढो सकता अतः रिश्तों में लगातार बदलाव देखा जा रहा है। स्थिति यह हो गई है कि व्यक्ति अपने से भी कटा महसूस कर रहा है।

इवेंट ओरिएंटेशन की प्रवृत्ति भारतीय समाज की नई परिघटना है। बच्चों का जन्म-दिन मनाना आम हो गया है। यह नया चलन है। परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद बच्चा पिता से पुरस्कार चाहता है। फंक्शन आयोजित करने के लिए ज़िद करता है। परीक्षाओं की उत्तीर्णता फंक्शन के बीच क्या संबंध है, इसका जवाब उपभोक्तावाद दे सकता है।

पूँजीवादी ढाँचा

भारतीय समाज धीरे-धीरे पूँजीवादी ढाँचे का शिकार हो गया है। सरकारें पूँजीवादी लोकतंत्र के जरिए बनाई जा रही हैं और उनके द्वारा पूँजीवाद जन-जन पर थोपा जा रहा है। सभी सामाजिक मूल्यों पर धन-मूल्य हाबी है। रिश्तों पर धन-मूल्य का प्रभाव किसी से छिपा नहीं है। समाजवाद की चर्चा लोग सुनना नहीं चाहते। पूँजीवादी प्रतियोगिता रोमांचकारी दौर में पहुँच चुकी है। जिसके पास पैसा अधिक है, वह मूल्यवान है। सारे सामाजिक मूल्य उसी के इर्द-गिर्द रखे जा रहे हैं। यहाँ तक कि धार्मिक कार्यक्रम भी धन-मूल्य से संचालित हो रहे हैं। कारपोरेट और धर्म-संस्थानों का गठबंधन आज की सच्चाई है। एक सच्चाई तो यह है कि सत्ता, कारपोरेट और धर्म-संस्थान गलबहियाँ कर चुके हैं। मंदिर कारीडोर में बदले जा रहे हैं और तीर्थ धार्मिक पर्यटन केन्द्र में। सबसे अधिक चढ़ावा देने वाला, सबसे बड़ा भक्त है, धार्मिक है।

सांस्कृतिक माध्यम

सोशल मीडिया, फिल्म, वेब सीरीज आदि सांस्कृतिक माध्यम हैं। इन माध्यमों का रोज विस्तार हो रहा है। ये नये-नये प्रयोग चलन में ले आ रहे हैं और बाजारवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। नये-नये फैशन घर-घर तक पहुँचाना इनका काम है। हर व्यक्ति में लालच पैदा करना यही आज की संस्कृति है। नये-नये रिश्ते पनपाने में भी इनकी भूमिका है। नये रिश्तों में गर्ल-फ्रैंड, ब्वॉय फ्रैंड आदि जन्म ले चुके हैं। सांस्कृतिक माध्यम अपनी भूमिका का विस्तार टेक्नालॉजी के जरिए करते चले जा रहे हैं। टेक्नालॉजी का विकास तेजी से हो रहा है और आगे भी होगा।

भारतीय समाज कई संस्तरों का है। हर स्तर पर इन नई परिघटनाओं का अलग-अलग असर देखा जा सकता है। समाज वैज्ञानिक इसका अध्ययन अपने मानको के अनुसार कर रहे हैं। ऊपर हमने जिन कारकों की चर्चा की है, इनके भीतर नये कारक उपज रहे हैं और रिश्तों को परिभाषित करने में, बदलने में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। सबसे चिंताजनक है कि समाज अपनी जड़ों से लगभग कट चुका है और नई संस्कृति, जिसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रचारित, प्रसारित कर रहा है, वह उसे और खोखला कर रही है। बहुत निचले स्तर तक इसका प्रभाव देखा जा सकता है।

रिश्तों के बदलाव की इस प्रक्रिया में अच्छा क्या है, बुरा क्या है यह अलग मूल्यांकन का विषय है। इतना तय है कि हमें रिश्तों को अब पारंपरिक तौर-तरीके से सोचने की जरूरत नहीं है, यह बाजार का दौर है और इसमें हर चीज पहले से अलग है। रिश्तों की नई संज्ञाएँ पैदा हो रही हैं और इनका अंत होने वाला नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि मूलोच्छेदित देश अपने भार से ढह जाता है। हम चाहेंगे कि इस देश के लिए वह दिन कभी न आए।

(लेखक संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग में अतिथि प्रोफेसर हैं।)

टूटते रिश्तों के बीच भारतीय समाज

–गिरीश्वर मिश्र

रिश्ते, प्रेम और अपराध के बीच पनपने वाली तिकड़ी आज भारतीय समाज को व्यथित और चिंतित कर रही है। ऐसा तब हो रहा जब कि कोई भी व्यक्ति रिश्तों में ही जन्म लेता है, उसी में पलता और उसी के सहारे जीवन यात्रा में आगे भी बढ़ता है। वस्तुतः इन रिश्तों का जैविक आधार है जो माँ के पेट में स्थित गर्भ के साथ अनिवार्य जुड़ाव की व्यवस्था और अवस्था में शुरू होता है। यह एक अटूट अपरिहार्य और अनिवार्य बंधन में बाँधता है। अतः इस रिश्ते को जीवन-पर्यंत चलते रहने की प्रासंगिकता बनी रहती है। सच कहें तो नया जीव अपने जनक (पिता) और जननी (माता) का उत्पाद होने के कारण वास्तविक अर्थ में उन दोनों का ऋणी होता है। कदाचित इसीलिए भारतीय समाज में ऋण की अवधारणा प्राचीन काल से सबके मन में बसी आ रही है। यह पीढ़ियों के बीच पारस्परिकता का सदृढ़ आधारशिला रचती है। इस बनाए रखने में संयुक्त परिवार और अन्य सहायक सामाजिक संस्थाओं और मान्यताओं की सहायक भूमिका थी। पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस तरह की व्यवस्था अधिकांश क्षत्रों में चलती रही है। आधुनिक युग में विस्थापन, पलायन, आव्रजन (माइग्रेशन) ने इस तरह की व्यवस्था को तीव्र किया है। जीवन को सुखी बनाने में आर्थिक तत्वों की बढ़ती आत्यन्तिक भूमिका के चलते जीवन की परिस्थितियाँ अब तेजी से उलट-पलट रही हैं। इन सबके प्रभाव में युवा वर्ग का एक बड़ा हिस्सा भ्रमित हो रहा है और रिश्तों की अहमियत को नहीं पहचान पा रहा है। वह इन्हें नजर अन्दाज कर रहा है और उस् स्वच्छंदता के दायरे में नए ढंग से परिभाषित करने में जुटा हुआ है। वह माता-पिता पक्ष के तमाम रिश्तों (यथा– मौसेरे, चचेरे, ममेरे, फुफेरे आदि) के लफड़े में महीं पड़ना चाहता। इस तरह के सभी रिश्तों को अपने लिए अनावश्यक बंधन मानता है और सिर से उतार फेंकना चाहता है। अपने जीवन और कर्म में बाधा समझ कर वह इनसे किनारा रखता है। वह अक्सर उनकी अवहेलना और उपेक्षा करता है। और तौ और अब रिश्तों से अलगाव की श्रेणी में माता-पिता भी शामिल होने लगे हैं। इसकी पुष्टि वृद्ध माता-पिता की देख-रेख न करने की बढ़ती घटनाओं में आसानी से देखी जा सकती है। बचपन में माता-पिता या किसी प्रौढ़ अभिभावक की देखरेख कर अभाव में शिशु के जीवन की यानी उसके अस्तित्व की कल्पना ही नही ंकी जा सकती। एक शिशु माता-पिता के साथ के रिश्तों के केन्द्र में रहता है परंतु उम्र के साथ रिश्तों की दिशा, विस्तार और वरीयता बदलती है। किशोर और युवा होते-होते पर निर्भर (डिपेंडेंट) शिशु आत्मनिर्भर (इंडिपेंडेंट) होने लगता है। फिर वह समय भी आता है जब शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के दौरान वह रिश्तों की बागडोर अपने हाथ में लेकर उनकी दिशा बदलने लगता है। इस कार्य में भावनात्मक परिवर्तन खास भूमिका अदा करते हैं जो किशोरावस्था में विशेष रूप से सक्रिय होते हैं। लड़के और लड़कियाँ एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं। स्त्री और पुरुष के बीच का जैविक और सामाजिक आकर्षण का संस्कृति और बाह्य परिवेश के क्रोड में स्वाभाविक विकास होता है। व्यक्ति के विकास के चरणों का एक क्रम प्रत्येक संस्कृति में मिलता है। इसमें रिश्तों की बनावट और बुनावट केंद्रीय महत्व की होती है। व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक जीवन-रस रिश्तों से ही मिलता है।

पिछले कुछ दिनों में ऐसी घटनाओं की खबरें मीडिया में तेजी से आ रही है जिनमें निजी रिश्तों में बढ़ती दरारों के चलते बहुत कुछ अवांछित हो रहा है। खास कर उन रिश्तों में जो युवाओं द्वारा खुद अपने निर्णय से सामाजिक मान्यताओं के अंकुश से परे जाकर अंजाम दिए जाते हैं। एक बात साफ है कि इन बेहद निजी मामलों के मूल में अक्सर भावनात्मक त्रासदी ही मुख्य है। पारस्परिक अविश्वास के कारण प्रतिशोध, धोखा और असंतोष की भावना तेजी से बढ़ती है। इस प्रसंग में यह भी रेखांकित किया जाना चाहिए कि आक्रामकता को आज एक परिपक्व और प्रौढ़ व्यक्तित्व की निशानी माना जा रहा है। एक सीमा के बाद रिश्तों के बीच उपचा भावनात्मक संघर्ष प्रज्ज्वलित हो कर हिंसक रूप लेने लगता है। हिंसा भड़कने पर बहुत कुछ जीवनविरोधी घटित होने लगता है। आज इस तरह की परिस्थितियों में न केवल आत्महत्याएँ हो रही हैं बल्कि एक दूसरे की जान तक ले ली जा रही हैं। इन स्वयंभू रिश्तों के बीच भावनात्मक उबाल बड़ी आसानी से अकेले व्यक्ति के स्व या आत्म के बोध को प्रभावित करता है। अहम को पहुँच रही चोट की तीव्रता उनमें गहरे मानसिक आघात को जन्म देती है। तब पति, पत्नी, साथी और प्रेमी एक दूसरे की

हत्या तक करने के लिए तैयार हो जाते हैं। मौका पाते ही वे ऐसे जघन्य और आपराधिक कार्य को अंजाम देने में भी नहीं हिचकते।

आज सहिष्णुता के सिमटते दायरों के बीच आपसी रिश्तों में दरारें तेजी से बढ़ रही हैं। इस संदर्भ में यह गौर तलब है कि आज तलाक और अलग-अलग जीवन बिताने (सेपरेशन) के फैसले अब बड़ी आसानी से लिए जा रहे हैं। ऐसा लगता है मानों विवाह के बाद तलाक अगला संस्कार है। अकेले, स्वतंत्र और अपने ढंग से अमर्यादित जीवन जीने की प्रवृत्ति आधुनिकीकरण की पहचान होती जा रही है। इसके अंतर्गत जुड़ने और निजी जीवन को अपने पसंदीता ढंग से जीने की छूट ली जाती है। इसलिए 'लिव-इन-रिलेशनशिप' का स्वेच्छाचार स्त्री पुरुष के बीच अनर्गल शारीरिक संबंध बनाने की पर्याप्त छूट दे देता है। इस पर कोई सामाजिक नियंत्रण नहीं रहता है और अब इसे प्रौढ़ जीवन जीने की एक विधा मानी जाने लगी है। आत्म-निर्णय और एक दूसरे के साथ रहने की मौखिक सहमति ही इसके लिए पर्याप्त होती है। इसे गैर-नाजायज मान कर विहित की श्रेणी में रखा जाता है। ऐसे रिश्तों के संदर्भ में समाज के मानक और परिवार की स्वीकृति की भूमिका गौड़ होती है।

ऐसे बहुतेरे मामलों में ऊपरी आकर्षण ही प्रमुख होता है जो टिकाऊ नहीं होता है। जब यह आकर्षण आयु बढ़ने या किसी तीसरे के प्रति आकर्षण के कारण घटता है या ऊप, थकान के कारण नीरस और बासी पड़ने लगता है तो दोनों व्यक्तियों के बीच जुड़ने और जुड़े रहने का कोई ठोस आधार नहीं बचता और वे अलग हो जाते हैं। जब इस घटना क्रम में प्रतिशोध और अविश्वास को अवसर मिलता है तो अपने साथी को पीड़ित करने, दंडित करने की सोच प्रबल होने लगती है। चूँकि ऐसे जोड़े अपने को दूसरों से (समाज से) काट कर रखते हैं और कोई समाधान की दिशा नहीं मिलती और अवसर पाकर उसके मन में हत्या जैसे घोर कदम उठाने की तैयारी होने लगती है। समय पर हस्तक्षेप न होने पर वे ऐसे आपराधिक कृत्य को अंजाम देने में सफल हो जाते हैं।

रिश्तों के इस बदलते परिदृश्य में कई किरदार सक्रिय होते दिखते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार के साथ एक तरह के उदार नजरिये को अपनाना और उच्छृंखल संबंधों की मीडिया, फिल्म और समाज में लगातार प्रस्तुति और स्वीकृति इस स्थिति को बढ़ावा दे रहे हैं। आज निरंकुश मीडिया से छन कर जो ज्ञान-विज्ञान और अज्ञान की बाढ़ आ रही है उससे भयानक मानसिक प्रदूषण का एक महामारी के रूप में फैल रहा है। उसकी चपेट में बच्चे, जवान और बूढ़े सभी आ रहे हैं। इसके ऊपर अंकुश का उपाय तात्कालिक आवश्यकता है। उद्दाम आकांक्षाओं के लिए अनंत आकाश में उड़ान भरने की असीमित कमामनाएँ और आत्म नियंत्रण एवं आत्मविवेक की जगह आत्मप्रकाशन को मुख्य रूप से स्थापित करना भी आज की परिस्थिति पैदा करने में सहायक हो रही है। निर्द्वंद्व स्वच्छाचार की छूट के बढ़ते प्रत्यक्ष और परोक्ष बहाने आज के स्वतंत्र मानस वाले मानुष की सीमाओं को तोड़ने की वर्जनाओं को खारिज करने को निरंतर उकसाते हैं।

रिश्तों की झींनी चादर के ताने-बाने कैसे चलें और इसकी बुनावट कैसी हो यह एक सांस्कृतिक प्रश्न या चुनौती है जिस पर गम्भीर विचार की जरूरत है पर तात्कालिक दबावों के बीच इसके लिए आवश्यक उपक्रम बौने, छिछले और दिखावटी साबित हो रहे हैं। जीवन मूल्यों के प्रश्न व्यापक महत्व के होते हैं। निर्मम, निरंकुश, असहिष्णु और स्वार्थपरायण समाज को लेकर किसी विकसित भारत और विवेकशील मनुष्य की कल्पना नहीं की जा सकती। रिश्तों का गणित कोई अमूर्त बौद्धि व्यापार न होकर दैनंदिन जीवन की अनिवार्य हकीकत है। इसे समझने और आवश्यकतानुसार समाधान निकालने की प्राथमिकता होनी चाहिए। इन्हें राजनीति, शिक्षा, संस्कृति और उन्नति के उद्यमों के बारे में विमर्श के केंद्र में होना चाहिए।

●

गाँव गिराँव हिन्दी मासिक पत्रिका पाठकों के लिए gaongiraw.in पर भी उपलब्ध।
अन्य वेबपेज के लिए देखें
www.gaongiraw.com
www.gaongirawsports.com

साइबर सुरक्षा हेतु पासवर्ड व मन दोनों मजबूत रखना होगा

-डॉ मनोज कुमार तिवारी

साइबर अपराध एक आपराधिक गतिविधि है जो कंप्यूटर, कंप्यूटर नेटवर्क या नेटवर्क डिवाइस को लक्ष्य करके किया जाता है, साइबर अपराध साइबर अपराधियों या हैकर्स द्वारा किया जाता है। साइबर अपराध व्यक्ति या संगठन द्वारा किया जाता है। कुछ साइबर अपराधी उन्नत तकनीकों का उपयोग करते हैं और तकनीकी रूप से कुशल होते हैं। साइबर अपराधी सिर्फ कंप्यूटर सिस्टम और नेटवर्क में सेंध नहीं लगाते हैं कभी कभी वे मानव मस्तिष्क को भी हैक कर लेते हैं ।

वैश्विक स्तर पर साइबर हमले तीव्र दर से बढ़ रहा है लगभग हर दिन 2,200 से ज़्यादा हमले हो रहे हैं यानि 39 सेकंड में एक हमला। रिस्कबेस्ड सिक्योरिटी की एक रिपोर्ट से सन् 2019 के पहले नौ महीनों में डेटा उल्लंघनों के कारण लगभग 7.9 बिलियन रिकॉर्ड उजागर हुए थे। साइबर खतरे के बढ़ने के साथ, साइबर सुरक्षा समाधानों पर वैश्विक खर्च बढ़ रहा है जो 2026 तक वैश्विक स्तर पर लगभग 260 बिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा।

साइबरसिक्यूरिटी वेंचर्स की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, 2025 तक साइबर अपराध से दुनिया को सालाना लगभग 10.5 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान होने का अनुमान है। यह साइबर अपराधियों के लिए संभावित इनाम है जो उन्हें अवैध गतिविधियों में संलग्न होने के लिए आकर्षित करता है। नेटवर्क का उपयोग करने वाले सभी व्यवसाय कॉर्पोरेट जासूसी या ग्राहक हमलों के लिए लक्ष्य होते हैं।

मनोविज्ञान के नियम एवं सिद्धांतों का उपयोग साइबर अपराधियों के व्यवहार व कारणों को समझने, साइबर सुरक्षा में संलग्न पेशेवरों को ट्रेनिंग एवं प्रोत्साहन, साइबर सुरक्षा के लिए लोगों में जागरूकता लाने तथा साइबर अपराध से पीड़ित व्यक्तियों में होने वाले मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं के प्रबंधन तथा भविष्य के लिए सतर्क बनाने हेतु किया जाता है।

सबसे पहले मनोविज्ञान के माध्यम से साइबर अपराधियों के व्यक्तित्व गुणों, व्यवहार पैटर्न्स की जानकारी प्राप्त किया जा सकता है तथा साइबर अपराध को प्रोत्साहित करने वाले कारकों की पहचान कर उन्हें अवरोधित किया जा सकता है। ऐसे कड़े प्रावधान की जाने की आवश्यकता है जिसमें साइबर अपराध से अर्जित संपत्ति का न केवल रिकवरी किया जाए बल्कि उससे कई गुना ज्यादा हर्जाना वसूल करने के साथ- साथ जेल की सजा एवं अन्य सजा के उपायों पर विचार किया जाए।

मनोवैज्ञानिक साइबर सुरक्षा के लिए कार्य कर रहे व्यक्तियों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहायता देने के साथ-साथ उन्हें सतत रूप से सतर्क व अभिप्रेरित रहकर कार्य करने के लिए प्रेरित करने में सहायता दे सकते हैं। साइबर सुरक्षा में उन व्यक्तियों की ही सेवा ली जानी चाहिए जिनकी इस क्षेत्र में कार्य करने की रुचि हो। मनोवैज्ञानिक साइबर सुरक्षा पेशेवर को ऐसे हमलों को रोकने के लिए सुरक्षा उपाय बनाने में सहयोग कर सकते हैं ।

मनोवैज्ञानिकों की भूमिका जो लोग साइबर क्राइम के लिए जोखिम में हैं उनके बचाव के लिए उन्हें मानसिक रूप से तैयार करने में सहायता प्रदान करना है क्योंकि साइबर अपराधी व्यक्ति के संवेग का उपयोग करता है जब व्यक्ति उच्च संवेग की स्थिति में होता है तो संज्ञानात्मक क्षमताओं जैसे निर्णय लेने की क्षमता, प्रत्यक्षीकरण, चिंतन व अन्य का ठीक से उपयोग नहीं कर पाता है। इसीलिए साइबर अपराधी किसी व्यक्ति को शिकार बनाने के लिए उसमें भय, असमंजस, लालच जैसे नकारात्मक संवेगों के उच्च स्तर का उपयोग करते हैं मनोवैज्ञानिक लोगों को मानसिक व सांवेगिक रूप से मजबूत करके उन्हें साइबर ठगी से बचाने में सहयोग दे सकते हैं।

साइबर क्राइम से पीडित लोगों को परामर्श व मनोचिकित्सा सेवाओं के द्वारा मनौवैज्ञानिक/मानसिक समस्याओं (संवेगिक प्रक्रियाएं, हेल्पलेसनेस की भावना, अपने बारे में नकारात्मक विचार, अंतरवैयक्तिक समस्याएं, नशा, लत की समस्या, तनाव, दुश्चिंता, कम आत्मविश्वास, काम में अरूचि, स्वयं को दोष देना, नींद की समस्या, ध्यान की समस्या, भूख की समस्या व अन्य) से बाहर निकलने में मनोवैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, समय रहते यदि पीडित के तनाव का प्रबंध नहीं किया जाता है तो इससे उन्हें शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है या वह आत्महत्या जैसे स्वघाती व्यवहार भी कर सकता है।

(लेखक एआरटीसी, एसएस हॉस्पिटल, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी के वरिष्ठ परामर्शदाता हैं)

खुल जा सिमसिम

–पूनम पाण्डे

अपने आसपास देखते ही कैसे रजरज कर अपनी बुढौती भूलभूले- बिसरे बचपन का सा अहसास होने लगता है उसको।इस शांत-सी कालोनी की सड़क के किनारे एक चाय की टपरी पर बैठी वह दूर दूर तक सब देख सुन रही है।कभी अंग्रेजी तो कभी हिंदी कविता का दोहराव करती मासूम आवाजें।ओह अगर इस सडक के कोने मे यह चायवाला अपना ठिया नही लगाता तो!' ओह, उसकी तो जान ही जाती ना ।बच्चों के यह समवेत सुर उसके कानों में जैसे लश्कारे मारते हैं। यह उसकी प्रिय जगह है। सुबह की पहली चाय रोज इधर ही पीने लगी है।कुछ दूर एक पार्क में योगा और चहलकदमी आदि कर आने के बाद अपने आप से जुड़ने के लिए वह यहां लपक कर आ जाती है एक कुर्सी ले लेती है।वह साठ सालकी गौतम बुद्ध इस जगह पर आते ही नादान, भोली सिद्धार्थ बन जाती है। आज फिर पौने नौ बज रहा है।और इतने प्यारे - प्यारे बच्चे हैं चारों तरफ कि उन पर बरबस लाड प्यार आने लगता है ।ऐसा लगता है मानो, कोई खिलौने का शोरूम खुलगया और उसमें से गुड्डे गुडिया निकल कर भागे ,और वह सभी भागकर इधर उसके सामने आ गये और चले हैं अपने प्ले स्कूलकी तरफ।रंग बिरंगे परिधान लालगुलाबी मुखड़े।

कुदरत की मासूमियत समाहित है इन सबमें।सुबह नौ से दोपहर एक बजे तक यह प्ले स्कूलसोमवार से शुक्रवार तक लगता है।इन पांच दिनों में यह स्कूलऔर आसपास की जगह भी खूब दमक उठती है।शनिवार और रविवार को अवकाश के कारण बच्चे नहीं दिखाई देते तब उसका ध्यान इधर-उधर जाता है। दो हरेभरे झक नीम, एक गुलमोहर, एक अमलतास, दूर एक आम का पेड़ भी दिखाई देता है।इतना ही नहीं सड़क पर उड़ती धूल, पत्थर, कंकड सब कितने साफ- साफ दिखाई देते है।बाकी दिनों बच्चों की हंसी खिलखिलाहट के खुशनुमा ताजे रंगों की छटा में यह कहीं दबे- छिपे से रह जाते थे। वह आज फिर आई है ,अगर शनिवार या इतवार है तो चाय की चुसकी लेते हुए इस समय तो सडक के डामर पर कहीं कहीं कुछ उखड़न की वजह से अजीब चित्र भी दिखाई दे जाते हैं।वह उनमे ननहे पदचिन्ह खोजती है और उसे गुदगुदी सी होती है।बाकी समय तो बच्चों के उजले चेहरे में अपना ही मुखडा दिखाई दे जाता है।

इस समय लंबी गहरी सांस लेकर खुद को बहलाने की कोशिश कर रही है।कोई खुलजा सिमसिम का जादुई दरवाजा होता और शनिवार- इतवार को भी बच्चे धूम मचाते चले आते तो उसके उदास ठहरे मन में खुशी का झरना फूट पड़ता।उसे मालूम तो है कि शनिवार इतवार बच्चे नहीं होगे।फिर भी वह जाती है।इस वातावरण में हवा में कहीं तो छोटे छोटे बच्चों की किलकारी हवा में घुली होगी ।बस यही सोचकर तो वह खिंची -खिंची आ जाती है।आखिर इंतजार के बाद सोमवार फिर आ गया।'लगता है कि आपका काफी जुड़ाव है इस जगह से ।' उसे हंसते भागते बच्चो में खोया और डूबा देखा तो होश मे लाने के लिए कड़क चाय का गर्म कप थमाकर चायवाले ने कह दिया ।'हम्म जी।' उसने झूठी और खोखली सी हंसी में सब टालदिया और सच को ढक दिया। इस संसार मे हर चीज भले ही अलग-अलग दिखाई देती होगी मगर सब एक दूसरे से जुडी हुई है।चांद और समंदर झीलऔर सितारे कितनी दूर मगर कितने पास।धरती का तन छिलता है मगर बीज के लिए नरम बिस्तर बनता है।अंबर अगर सिसकता है तो बीज की अंगडाई उसकी जादुई जिंदगी की रोशनी और करीब आती है।

बदरी का भरा- भरा आंचलछलक जाता है मगर रिमझिम बरसात से नदी का आनंद और लचक कितनी बढजाती है।इस लगाव और जुड़ाव ने ही तो जीवन में रस भरा है।वह मन ही मन सोचने लगी।

सोचते ही सहसा पलकें गीली हुई और एक बूंद ने टपक कर नमकीन छौंक लगा ही दिया उसकी चाय में।मगर वह तो उधर उस तरफ उसे देखकर तृप्त हो गयी।फुसफुसाकर बोली किंशु।ओह किंशु। किंशु दूर से दिखाई दे रहा था।अपने पिता राघव की उंगली पकड़कर चला जा रहा था।बरबस उसके मुँह से निकला 'राघव राघव।' मगर उसकी फुसफुसाहट राघव के कानों तक पहुँच नहीं सकी।राघव ने उस तरफ देखा ही नहीं।राघव इधर-उधर देखता ही किसलिए राघव को तो यही लगता है कि वह अभी भी बंगलौर में है। मगर पिछले तीन महीने से वह जौसगंज में ही किराये का एक मकान लेकर रहने लगी है।राघव ने तो आठ सालपहले नाता तोड़कर सब अलग- अलग कर दिया।खुद को उससे अलग किया।उसके दिलको भी टुकड़े- टुकड़े करके अलग-अलग कर दिया । उसने कंपकंपाती आवाज में बेटा कहा मगर तभी तैश में आकर राघव ने कैसे एसिड की बोतलजैसा वह सवालउस पर फेंका ।'जी श्रीमती चंपा जी।''अरे राघव मै मां हूं।' वह उसका हाथ थामने लगी।'ओहो अचछा।पहले पापा को अकेला छोड़कर दुबई चली गयी।उसके बाद मुझे भी एक सालका नानी के घर छोड़कर गयी।नानी मुझे तीन सालका हास्टलमें छोड़कर चली गयी ।नये

पापा मुझे आपके दिये हुए नये पते की स्लिप के साथ मुझे एक दिन फिर एक और नये हॉस्टलमें रख आये।मै फर्नीचर सा इधर उधर किया जाता रहा।मेरे पास आपके भेंट किये खिलौने रोबोट मगर सबसे बडा रोबोट मै खुद।कालेज शुरू हुआ तो आपने फिर साथ रहने से मना कर दिया। मै अकेला था रोता था मगर आपको माडलिंग और पत्रकारो की भीड़ से ही फुर्सत नहीं थी।' याद है ना जब मैने कहा था ।मां अभी बेरोजगार हूं।मगर कुछ समय आपके पास बिताना चाहता हूं।तो आपने कैसा फटकार दिया ।'उन्नीस सालके हो।मां के पल्लू से चिपकना चाहते हो?' फोन से अंगार निकलरहे थे।मै अवसाद में था।आप जुनून से भरी थी।मैं आपसे बात करना चाहता था।आपको ब्यूटीशियन से फारिग होने मे चार- चार घंटे लग जाते थे, फिर मेरे लिए कुछ बचता तो बस एक- आध मिनट और वह भी फोन पर मुझे लताड़ने के लिए। न सरदी की न गरमी की छुटटी न कोई परव न त्यौहार कुछ नही मनाया आपके साथ ।आपने रखा ही नहीं अपने पास पलदो पल।तो आप सुनिये कि अब मैं शादी करने जा रहा हूं।' उसने एसिड अटैक के बाद उसके ऊपर ताजा नमक बुरक दिया।' ओह सच राघव।मै जानना चाहती हूं सबकुछ।' राघव की आशा के विपरीत वह खुश ही हुई और इतने अपमान के बाद भी वह हिम्मत नही छोड रही थी।'आप चाहें तो एक कप चाय पीकर चली जाये।फिलहालमै अपने काम पर जा रहा हूं।'कहकर वह निर्मोही बनकर जाने लगा।'बेटे, मै रिपोर्ट लाई हूं।मुझे कैंसर ।,, तो अब सब छोड़कर तुम्हारे पास रहना चाहती हूं।' उसकी आवाज कांप रही थी।' देखिये , जरा प्रैक्टिकलबने आप ।इलाज तो चिकित्सक करते है।

अस्पतालहै आपके लिए सही जगह।'यह कहता हुआ अब एकदम ही चला गया राघव।राघव के यह दो वाक्य दोहराये तो उसे भी याद आया उसने कहा था ।'पढाई तो टीचर से और अपने सहपाठियो के साथ होती है। छुट्टी में इधर आकर करोगे भी क्या।वहीं रहो ।मै यूरोप के टूर पर रहूंगी। तो यह हास्टलही है तुम्हारी सही जगह।' ओह राघव बेटे।' अकेली और कमजोर सी वह कुछ देर के लिए जड हो गई। मगर जब उसकी ममता भरी ख्वाहिश ने दम तोड़कर उम्मीद खो दी तब वह लौट गई। राघव ने पता तो सब लगा ही लिया था कि वह बंगलौर के किस अस्पतालमे भर्ती है।उसका इलाज चलरहा है।आदि, आदि। खैर पांच सालबाद अब वह बीमारी के चंगुलसे आजाद थी।मगर यहां आकर वह अतीत के जालमें कैद हो रही थी।उसे कभी- कभी शर्म भी आती थी यह देखकर कि अभिभावक माता- पिता किस वात्सल्य से अपने बच्चों को साथ गपशप करते हुए पले स्कूललाते है दोपहर को लेने भी आते हैं।उसको भी खूब ममता उमड़ी थी।मगर उसकी वह कच्ची उम्र नासमझ पालन पोषण तथा बदले की भावना ने उसका बेटा राघव ही उससे दूर कर दिया था।राघव के पिता को विवाह के दिन ही अपनी कंपनी की निजी सचिव की हथेली,गरदन, बाहें सहलाते और चंपा से अधिक उससे बतियाते देख चंपा के होश तो उडने ही थे।

मगर सकपकाकर या बौखलाकर वह शिकायत करती भी तो आखिर किससे।उसका बडा भाई- भाभी तो विवाह से पहले ही अलग रहते थे।विवाह रचाकर कबसे अलग ही थे।मां से तो कहना ऐसा था जैसे छलनी में पानी भरना।आज जिन महाशय से विवाह करके आई थी वह तो खुद उसकी रंगीली और छबीली मम्मी के पुराने आशिक ही थे ।उससे आयु में ग्यारह सालबडे।उसकी मम्मी इनके घर पर पहले केवलकुक थी।धीरे- धीरे सारे घर की व्यवस्था वही देखने लगी थी। पिता को उसने बचपन मे देखा था उसके बाद एक दो सालतक नहीं देखा फिर एक बार कुछ दिन के लिए देखा और तब से आज तक नही देखा। तड़पती हुई मछली की तरह वह विवाह के एक माह बाद जब अपनी मां के घर आई तो सबसे पहले बदहवासी में बिल्लू के पास ही गयी।'अरे बाप रे इतने आंसू। समंदर बन जायेगी मेरी खोली।ऐ चंपा।ऐ सुन दुखी मत हो ।तू बोलबस बता दे कि हुआ क्या है।मै तेरे लिए हरदम हाजिर।' बिलल्‌ू के शबद मरहम बनकर उसको कितना सुकून पहुँचा रहे थे वही जानती थी।' सुन बिल्लू तू उस रोज कुछ कह रहा था कि ब्रा पैटी का विज्ञापन करना है। चलचलआज और अभी ।मैं उन सबके लिए तैयार हूं।''अरे बाप रे। ये बात है ।मगर वह तो एक सालपुरानी बात हो गई रे चंपा। तो अब कुछ काम नहीं है मेरे लिए।' वह चंपा का चेहरा पढने की कोशिश कर रहा था।'तू कह रहा था ना कि कलाकार विदेश टूर करते है तो उनके साथ रहना ।'' अरे , चंपा , हां हां मगर तू अग्रेजी तक नही जानती।''कैसे नही ।जानती तो हू।अरे एकदम स्टाईलमे बोलना होता है।अपना स्टाईलबदल।' यह सुनकर उसने अपना फोन लिया और एक दो फोटो अपने पति की दिखाई जिनमे वह निजी सचिव उनसे चिपकी हुई थी। मुझको ऐसी ही बनना है ना।'ओह ये तो तेरा आदमी।तो ये अश्लीलऔरत है तेरे मोटे मोटे टेसुए की वजह।' गुस्सैलहोकर बिल्लू अब उस फोटो को कभी मुंह चिढाता तो कभी उसको मुक्का दिखाने लगा।' सही पहचाना बिलल्‌ू मै तेरी शरण में।' कहकर वह आज बिल्लू के सीने से चिपक गई।' अरे, रूक जा फेवी स्टिक इससे पहले आज तक तो हाथ तक न पकड़ने दिया।और अब सीधे चिपका चिपकी चालू है ।है,, है। 'कहता बिल्लू हंस दिया।' ठीक बात कही बिल्लू।' कहकर वह फिर से बिल्लू की छाती को अपनी साँसों से गरमाहट देती रही।उसके बाद बिल्लू और चंपा ने जो गुलखिलाये वो सारी बस्ती ने सारे शहर ने देखे । अब तो भरभरकर नोट छापने लगी थी चंपा।समय सिखाये कोतवाली।एक तरफ समय पंख लगाकर उडता रहा और चंपा

शातिर होती गई।उसे बहुत सुकून मिलता जब उसका पति नन्हे राघव को देखने के लिए भी तड़पता और तरस कर रह जाता।

वैसे उसका खुद का मन था कि कभी राघव को हास्टलसे लाये ।मगर इस दोगले पति से जलकर अपनी ममता का गला उसने खुद ही दबा कर रख दिया था।न राघव हास्टलसे आयेगा।न यह आदमी उसे मिलेगा बात खतम।मगर चंपा ने अपने लिए कांटे बो दिये थे।वह भूलगई कि बिल्लू को तन मन सौंपकर वह भी बिलकुलवैसा कर रही है जैसा उसके पति कर रहे थे।इसका अंजाम तलाक तक पहुंच गया और अब वह बिल्लू की पत्नी थी।बिल्लू से विवाह हुआ तब राघव सात सालका था ।उसका हास्टलबदलदिया गया था।उसके बाद शनैः शनैः चंपा पर नाम दाम और चाम का नशा चढ़कर बोलने लगा था।मगर यह भी सात आठ सालचला।अब उसे बार बार थकान होने लगती। वह बस आराम करना चाहती।कभी बुखार की गोली गटक लेती तो कभी हेल्थ लिक्विड पी जाती।पा?च सालइसी तरह और खीच ही दिये।आखिरकार बिस्तर पकड़कर पड गयी।बिल्लू को अब ताज़ा लहू चाहिए था।उसका तो धंधा था।उसे अमीर के बाद और भी अमीर बनना था।जब उसने भी टालना और मुँह मोड़ना चालू किया तो सदमा लगा एक दिन दर्द से बेहोश हो गई और जांच के बाद कैंसर की रिपोर्ट भी आ गई । मगर चंपा के रिश्ते- नाते तो सब खत्म थे।उसके इरादे टूट रहे थे।राघव से आशा थी सो वह भी ताशपत्ते का महलसाबित हुआ और भरभराकर ढह गया। दिन बीतते रहे। आज आठ महीने बाद वह जौसगंज से सामान समेट कर लौट रही थी।रेलगाड़ी में बैठी थी तो वही दृश्य याद आ रहा था।डैडी अब मै नये स्कूलमें।मेरे ग्रेड देखो।ये देखो ।किंशु अपना प्ले स्कूलका रिपोर्ट कार्ड लेकर खुशी से बौरा रहा था।ओह किंशु उसकी आंखें फिर से भर आई थी।कमालहै ।इस नये शहर के किसी कोने में मेरा बेटा भी रहता था इसीलिए यह शहर अपना सा लगा।वह भीतर ही भीतर सुबक रही थी।आज वह एक प्ले स्कूलकी समन्वयक से बात कर रही थी।उसकी बात सुनकर समन्वयक कह रही थी।' मै हैरान हूं आप इकसठ सालकी होकर भी बालमनोविज्ञान को कितना बारीकी से समझती है।आपने बच्चों की आदत उनकी बातों उनकी उत्सुकता पर जितने सटीक विवरण दिये हैं।मै प्रभावित होकर उसके ही आधार पर आपको नौकरी देना चाहती हूं।आप सचमुच कुछ बेहतर कर सकती हैं।मेरा विश्वास है।और आपके चेहरे पर तो एक गुलाबी चमक भी है ।तो आप आज से ही काम ले लीजिए। आपको बस ममता बरसानी है।समझ रही है ना । जी जी उसका जवाब आ रहा था।'तो आप पहले क्या काम करती थी?''जी मैं एक सामान्य गृहिणी थी।'कहकर चंपा ने उनका आभार प्रकट किया।अब वह बच्चों की सेवा कर राघव के लिए प्रायश्चित करना चाहती थी।

Durgesh, Pushker road,
Kotra, Ajmer
305004 Rajasthan
9828792720

गांधी धुन

–श्यामल बिहारी महतो

कामता बाबू को लोग दफ़्तर में गांधी जी कहा करते थे। कंपनी काम के प्रति पूर्ण समर्पित! यह समर्पण की भावना उनके रिटायरमेंट के बाद भी किसी आदत की भाँति कायम रही। अपने कार्यकाल के दौरान शायद ही कभी ऐसा मौका आया हो, जब उन्होंने किसी मजदूर का काम करने से आनाकानी की हो। दूसरों की सेवा की खातिर सदैव तत्पर रहते। सेवा की यह भावना उनके भीतर एक जुनून की भाँति हरदम विद्यमान रहती थी। कोई अंधे से पूछे कि तुम्हें क्या चाहिए ? तो नि ः संदेह उसका जवाब होगा ' दो आँखें..!' उसी तरह कोई कामता बाबू से पूछते कि आपको क्या चाहिए तो वे कहते ' काम..और काम के सिवाय कुछ नहीं..!' चाहे दफ़्तर का पढ़ाई-लिखाई वाला कोई भी काम हो.बेकार बैठकर समय काटना उन्हें आता नहीं था। लेन-देन के मामले में भी वो अनोखे और अजूबे थे ! अपने सर्विस जीवन में रिश्वत तो कभी ली ही नहीं उसने, बस यही कहते रहे ' यह पाप है ! नाजायज है ! दूसरों का गला दबाना है, उनका हक छीनना है..। '

हाँलाकि इसी गाँधीवादी सिद्धांत को लेकर उनका बड़ा बेटा महेश बाप से खफा -खफा ! रहता था। दिन भर जाने कहां कहां भटकता फिरता और देर रात आकर घर में बाप से लडता। दोनों बाप बेटे के बीच मतभेद कभी कम नहीं हुआ। महेश सदैव उबाल में रहता -' कोई कुछ करना चाहे तो कैसे करे ? इस घर में गांधी की आत्मा जो वास करती है। '

कामता बाबू कसमसाकर रह जाते। उनके लिए सुकून की बात यह थी। उनका छोटा बेटा नरेश अपनी बीए की पढ़ाई के साथ-साथ एक अखबार के दफ़्तर में प्रूफ रीडिंग का काम भी सीख रहा था। कामता बाबू को अपने इस होनहार बेटे से ढेर सारी उम्मीदें बंधी हुई थीं।

हां,तोकामता बाबू जब यह कह रहे होते कि रिश्वत लेना पाप है,दूसरों का हक छीनना है,तो आस-पास के मुस्कुराते चेहरों से अनभिज्ञ होते। जबकि रिश्वतखोरों के बीच ही हर दिन उनका उठना बैठना होता। देखना तो तब दिलचस्प होता, जब कोई मलकटा सरदार अपने दंगल का तिमाही बोनस या फ़िर सीक लीव का का पैसा चेक करवाने आता और काम के बदले सौ दो सौ देने लगता तो वो एकदम से उस पर भड़क जाते ' तुम सब मुझे नोट दिखाते हो, कामचोर कहीं के, हमें क्या समझ रखा है, अकाल की ढेंकी..! चल भाग। '

सरदार हंसते हुए भाग खड़ा होता।

तभी कोई कह उठता ' कामता बाबू, आपको इस युग में पैदा नहीं होना चाहिए था। '

कामता बाबू बिना कहे मुस्कुरा उठते थे। लेकिन ऊपरी आमदनी को इस तरह लतियाता देख सेल विभाग के मास्टर बाबू कुढ़सा जाता था। खखस कर कह उठता -' कामता बाबू आपको ऐसी जगह नौकरी नहीं करनी चाहिए थी। '

जवाब में कामता बाबू केवल हंस भर देते थे।

निर्धारित समय पर आफिस आना और गोंद की तरह दिन भर अपने काम में चिपके रहना,उन्हें बहुत भाता था। कंपनी नियम से सदैव बंधे होते। सर्कुलर से कभी इंच भर भी इधर-उधर होते नहीं देखा गया। जोड़-घटाव के मामले में वो खुद एक कम्प्यूटर थे। सालाना बोनस हो या सैलरी, सहकर्मी सब उन्हीं से' वेरीफाई ' करवाते। अधिकारी भी उनके बेदाग छवि और ईमानदारी से खासा प्रभावित थे।

लेबर आफिसर अमरीक सिंह तो यहाँ तक कह देते ' कामता बाबू, सालाना बोनस पर आपका जोड़ ही अंतिम माना जायेगा..।'

अपने जीवन और काम को उसने रूटीन बद्ध कर रखा था।

आफिस से घर और घर से आफिस। यही उनकी दुनिया थी। बाकी बचा तो सगे-संबंधियों के यहाँ कभी मर- मेहमानी भी कर लेते थे। लेकिन मेला- सिनेमा या अन्य मनोरंजन के साधन कभी उनको आकर्षित नहीं कर सके। हां, वक्त निकाल गांव समाज की बैठकों में जरूर शामिल होते थे,ताकि गांव का भाई चारा हर किसी के साथ बना रहे।

उनके जीवन के साथ जुड़े कई दिलचस्प प्रसंग आज भी लोगों याद हैं। वो भादो माह की एक रात थी। अचानक कामता बाबू विस्तर से उठ बैठे। उन्हें नींद नहीं आ रही थी। रोगों से मुक्त रमा देवी गहरी नींद सो रही थी। कामता बाबू ने धीरे से दरवाजा खोला और बाहर निकल आये। घर से आफिस की दूरी महज तीन किलोमीटर की थी। जब वह आफिसगेट के सामने पहुँचे तो रात के दो बज रहे थे और रात्री सुरक्षा गार्ड कुर्सी पर बैठे- बैठे उंघ रहा था। उसने धीरे से गेट को धकेला और अंदर आ गए। जेब टटोली आफिस की चाबी उनकी जेब में थी। पहले उन्होंने दरवाजा खोला और अंदर जाकर कुर्सी पर बैठ गए। रात को पहली बार अपने ही आफिस में बैठ,अपने ही आफिस का मुआना कर रहे थे। एक अद्भुत अह्सास!

जब वापस लौटने लगे तो रात्री गार्ड लंगन सिंह चौंकता हुआ उठ खड़ा हुआ। पहचानते ही पूछ बैठा -'कामता बाबू आप

यहाँ इस वक्त..? '

'घर में नींद नहीं आ रही थी। बाहर निकला तो टहलते हुए इधर आ गया। यहाँ पहुँचा तो देखा, आप कुर्सी पर ही सो रहे हो..!'

'आप, अंदर भी गये थे..?'

'हां, अंदर गया, आफिस खोला, लाइट जलाई, थोड़ी देर बैठा फिर दरवाजा बंद किया और चल दिया..।'

लगन सिंह सोंच में पड गया। उसे लगा इन्हें नींद में चलने की बीमारी है। ताजूब है ! यह अंदर गये और मुझे पता तक नहीं चला। अगले ही पल क्या सोच वह कामता बाबू के चरणों पर झूक गया था ' कामताबाबू,यह बात पीओ साहब से मत कहिएगा,नहीं तो मेरी नौकरी चली जायेगी..। '

' उठो,नहीं कहूंगा। लेकिन इर तरह सोना ठीक नहीं है, लाखों करोड़ों की संपति यहाँ पड़ी है, तुम्हारे भरोसे में..चोर लुटेरे हैं..। '

'कसम खाता हूँ, आगे से ऐसा नहीं होगा..!' लगन सिंह ने कहा और कान पकड़ लिया था।

लोगों ने सुना तो खूब हंसे 'कामता बाबू भी हद करते है..!'

इधर कामता बाबू को काफी परेशान देखा जा रहा था। पता चला पत्नी की बीमारी से जूझ रहे है। एक दिन अचानक फुसरो दवा दुकान में मिल गए। बीमार-बीमार से लगे। प्रणाम- पाती हुई। तो पूछा 'कैसे है आप, बीमार लग रहे है..?'

लगा हिचक कर रो पड़ेंगे,ऐसा भाव उभर आया उनके चेहरे पर।

'पत्नी बीमार है,उसी की दवा लेने आया हूँ..!'

'क्या हुआ भाभी जी को,मनसा पूजा में देखा था, भली चंगी थी..!' मैं हैरान था।

' दो माह पहले सर में दर्द तीव्र दर्द उठा था। डॉक्टर के पास ले गया। एक्स-रे हुआ। देख कर डॉक्टर ने ' इसे कैंसर हो गया है !'

'मुझे विश्वास नहीं हो रहा डॉक्टर साहब..। ' मै स्तब्ध था।

'आपके न मानने से इसका कैंसर ठीक नहीं हो जायेगा, जब तक है, दवा चलाते रहिए, रीलिफ मिलेगी..!' डॉक्टर ने जोर देकर कहा था। तब से भाग - दौड़ जारी है..सुधीर बाबू..। '

उन्होंने आगे और भावुक स्वर में कहने लगे ' जानते है सुधीर बाबू, जिस दिन मैं रिटायर हुआ, सबसे ज़्यादा रमा ही खुश थी, मुझसे कहने लगी ' अब फूर्सत ही फुर्सत ! अब हम जहां चाहें,घूम-फिर सकते है,रिश्तदारों से मिल सकते है, उनसे न मिलने जुलने की शिकायत भी अब हम दूर कर देंगे'। बेचारी को पारसनाथ पहाड़ भी हम एक बार घूमा न सके, हम जैसों का ज़िन्दगी इसी तरह इम्तिहान लेती है सुधीर बाबू..!'

इसी के साथ वो चले गए थे। उनको जल्दी जाना था। पर उनके अंतिम शब्द ने मुझे झकझोर डाला था। अच्छे के साथ ही यह सब क्यों होता है ? बहुत देर तक मैं इसी सोच में डूबा रहा।

तमाम भाग दौड़ के बावजूद कामता बाबू पत्नी रमा देवी को नहीं बचा सके। पत्नी की मृत्यु से वो मर्माहत और शोकाकुल तो थे। लेकिन उनके लिए यह कोई अनहोनी न थी। सबका सब कुछ तय रहता है। यह उनका दार्शनिक विचार था। जो अक्सर लोगों से कहा करते थे।

सुबह रमा देवी ने अंतिम सांस ली थी। अड़ोस- पड़ोस के लोगों का आना जाना शुरू हो गया था।

' कभी जर न बुखार, सीधे कैंसर....!' लोग भी हैरान थे।

रमा देवी की मृत्यु की खबर गांव फैल चुकी थी। सगे- संबंधियों का भी आना शुरू हो गया था। घर में मातम छाया हुआ था और सबकी आँखें नम थी। कामता बाबू एक कोने में खड़े शोक में डूबे हुए थे। रोने वालों में सबसे ऊंची आवाज महेश की थी,जो कहीं से पी आकर आंगन के बीचों-बीच खड़ा था। छोटा बेटा नरेश मां की शवयात्रा की अंतिम तैयारी में लगा हुआ था। रमा देवी के सिरहाने अगरबत्ती जला दी गई थी। अब सबकी निगाहें कामता बाबू पर आ टिकी थी। नरेश बाप के करीब पहुँच कंधे पर हाथ रखा और फफककर रो पड़ा ' बाबू जी, मां..अ !' लगा कामता बाबू भी रो पड़ेंगे।

'लोगों से अब भी कहते सुना जा रहा था' बेचारी गौ थी..गौ..! '

'कम खर्च से भी कैसे घर चलाया जाता है,यह कोई रमा देवी से सीखे।'

'कम पैसों को लेकर कभी पति को कौसते नहीं सुना..!'

'यह बड़ी बात है..! '

तभी जीप रूकने की आवाज नेंसबका ध्यान अपनी ओर खींचा था।

'कामता बाबू के दफ़्तर के साथी होंगे..।' किसी के मुँह से निकला।

परन्तु वह धनपत सिंह था। आफिस का चपरासी। उसे आया देख कुछ देर के लिए कामता बाबू भी सोच में पड़ गये ' इस तरह धनपत का अचानक से आना ?,क्या वजह हो सकती है, वो भी कोलियरीजीप से आया है, कामता बाबू को मालूम था धनपत साइकिल से आना जाना करता है। फिर यह जीप ...?' कामता बाबू के दिमाग में सवाल ही सवाल थे। ' कामता बाबू के मन में यह उमड- घूमड चल ही रहा था कि तभी उसे चेतलाल की कही बात याद आई। परसों ही वह बतला रहा था ' कामता बाबू, लगता है कंपनी को लाखों का एलबी लगेगा..। '

' क्यों,ऐसी क्या बात हो गई है..?'

' दोनों कम्प्यूटर खराब हो गया है। पानीपत और रोपड का कोल बिल रूका पड़ा है। '

' कहीं यह जीप मेरे लिए तो नहीं भेजा गया है..?' उनके दिमाग में बात उठी।

तभी धनपत सिंह सामने आया था। उसने प्रणाम के साथ ही मैनेजर अग्रवाल साहब का पत्र उन्हें पकड़ा दिया। पत्र खोला। लिखा था' कामता बाबू, इस वक्त हमारे

सामने एक समस्या आ खड़ी हो गई है। पंद्रह तारीख तक पानीपत और रोपड का बिल भेजना है औ हमारे दोनों कम्प्यूटर खराब हो गया है, मास्टर बाबू तो है,पर उसके जोड घटाव पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। लाखों का मामला है। हमें आपकी मदद चाहिए। मै जानता हूँ, आप रिटायर कर चुके है। इसके लिए आपको मजबूर नहीं किया जा सकता है। लेकिन कंपनी के लिए आज भी आप बहुत खास है। आज भी हमें आप पर पूरा भरोसा है... कुछ रकम भेज रहा हूँ, अस्वीकार मत कीजियेगा, आपका.... अग्रवाल साहब मैनेजर...। '

धनपत ने दूसरा लिफाफा भीकामता बाबू को पकड़ा दिया था।

'भतीजे,अच्छा होगा, दाह-संस्कार के लिए मां को सीधे कासी ले जा...।' पड़ोसी लटन चाचा नरेश से कह रहा था -' सब काम एक ही साथ निपट जायेगा। कासी में दाह-संस्कार बड़ा पुण्यकर्म है, जलने वाले और जलाने वालों का जीवन भी तर जाता हैं..! बाप से कहो,वो हां कह दे..।'

'अरे, मैं तो कहूंगा,बाप से पूछना बेकार है।' सगा जेठा ने कहा– 'जिस आदमी ने आज तक घर में सत्यनारायण कथा तक न होने दी,उनसेकासी ले जाने की बात करोगे तो कहेगा ' सब फिजूल खर्ची है, वहां पण्डो का पेट भरना है...।'

बढ़ते शोरगुल से कामता बाबू का ध्यान भंग हुआ। जीवन की पटरी ने उनको आंगन में ला खड़ा कर दिया। उन्होंने वर्तमान हालात का जायजा लिया। दोनों बेटे उन्हीं की ओर देख रहे थे। कामता बाबू को लगा उन्हें अपना कर्म नहीं छोड़ना चाहिए। आज तक तो वो कर्म को ही जिता चला आ रहा है। जीना- मरना संसार का दस्तूर है। जब वह नहीं बदलता है, फिर हम क्यों बदलें, क्यों पीछे हटें अपने कर्म से। इसी के साथ उलझनों से वो बाहर निकल आए थे। दोनों बेटों को उसने पास बुलाए और कहा– 'मुझे अभी दफ़्तर जाना है। मां की दाह-संस्कार तुम दोनों को करना है, कहां और कैसे करोगे,आपस में तय कर लो..।'

चलने से पूर्व उन्होंने अग्रवाल साहब का भेजा लिफाफा नरेश के हाथ में थमाते हुए कहा 'इसे संभाल कर रखो, इसमें जो भी रकम है, मां के श्राद्ध कर्म में काम आयेंगे, मैं चलता हूं..चलो धनपत..।'

'इस तरह चले जाने से लोग क्या कहेंगे 'यकायक मन में आये इस विचार ने कामता बाबू के बढ़ते कदम पर ब्रेक लगा दी। उसने रमा देवी की ओर देखा, दो कदम आगे बढ़ आये। उस पत्नी के खातिर जो आज तक उनके साथ हर सुख-दुख में भागीदार बनी रही। और जो अब इस दुनिया में नहीं रही। उन्होंने मृतशैया पर लेटी पत्नी से कहा, 'क्षमा करना रमा, तुमने अपना कर्म पूरा किया, अब मैं अपना कर्म करने जा रहा हूँ..!' डबडबाई आंखों को कामता बाबू ने गमछे से पोछा और धीरे से धनपत के पीछे हो लिए।

नरेश, महेश से कह रहा था 'दादा, ठाकुर (हाजाम) से कह दो, गांव में खबर कर दें। मां का दाह-संस्कार, दामोदर घाट पर होगा, पुण्य- प्रताप के चक्कर में आदमी सदियों से लुटाते रहे हैं। लेकिन हमें वही गलती नहीं करनी है। मनुष्य का जीवन कर्म के साथ जुड़ा हुआ है,उनके लिए कर्म ही धर्म है ! कासी- बनारस में दाह-संस्कार से लोगों का पाप नहीं धूल जाता..!'

नरेश की कही बातें जीप पर सवार हो रहे कामता बाबू के कानों में भी पहुँची थी। उनके अंदर का द्वंद्व छंट चुका था। और वो शांत चित्त नजर आने लगे थे।

ग्राम-मुंगो, पोस्ट-गुंजरडीह, थाना-नावाडीह, जिला- बोकारो, झारखंड पिन कोड-829132, फोन नम्बर-6204131994

खेद है

डॉ मुकेश असीमित

संसार में दो ही चीज़ें आपको मिलेंगीः सड़कों पर खुदा और लोगों की ज़ुबान पर खेद। आजकल खेद बड़े ज़ोर-शोर से प्रकट किया जा रहा है। जहां देखो, वहां खेद। रेलवे प्लेटफ़ॉर्म पर ट्रेनें लेट हो रही हैं, तो खेद। रेलवे विभाग भी जब तक एक घंटे में सौ बार खेद प्रकट न कर ले, आपको ट्रेन में बैठने नहीं देगा।

सोशलमीडिया पर देखो, तो विभिन्न प्रकार से खेद प्रकट किया जा रहा है। कोरोना कालमें तो खेद की ऐसी बाढ़आ गई कि अगर कोई गलती से अपनी शादी की सालगिरह या जन्मदिन पर माला पहने हुए फोटो पोस्ट कर देता, तो लोग खेद प्रकट करने लगते। अब तो खेद का अंग्रेज़ीकरण भी हो गया है। लंबा-चौड़ा खेद लिखने की ज़रूरत नहीं, 'रिप ' लिखकर काम चलजाता है।

नेता लोग तो खेद प्रकट करने में धुरंधर हैं। सुबह-सुबह इनके पीए इन्हें खेद प्रकट करने के दस ठिकाने बता देते हैं। कुछ तीये की बैठक, कुछ बाढ़-सूखे से प्रभावित इलाक़े, और कहीं पुलया खदान धंसने से हताहतों का स्थल—इनके लिए ये जगहें इनकी कर्मस्थली हैं। खेद प्रकट करना, एक तरह की खेती है। खेद के बीज से वोटों की फसलउगाई जाती है।

नेता जी की गाड़ी में हमेशा पुष्प-चक्र तैयार है। रास्ते में अगर कहीं कोई भीड़ मुँह लटकाए मिलजाए बस , इनके खेद के स्वर स्वतः प्रस्फुटित होने लगते हैं—'हमें खेद है कि...'। नेता जी फिर पूछते हैं, 'अच्छा, किस बात पर खेद प्रकट करना है?' मामला समझते ही उनके वाक्य का 'फिलइन द ब्लैंक्स' पूरा होता है।

जनता भी इन नेताओं को खेद प्रकट करने के भरपूर मौके देती है। कभी रैली में दबकर, कभी सत्संग में कुचलकर, कभी फुटपाथ पर किसी रईस की गाड़ी के नीचे आकर, तो कभी पुल के नीचे धँसकर।

खेद की भी घुड़दौड़ लगती है—पीड़ित के घर कौन पहले पहुँचे, इसकी होड़। अगर विपक्षी पार्टी पहले पहुँच गई, तो आपके खेद का पुछल्ला फिर जेब में ही रह जाएगा। सारा खेद का हलवा तो विपक्षी पार्टी खा जाएगी। अखबार वाले भी उसी को महत्व देते हैं, जो सबसे बड़ा खेद प्रकट करता है। छोटे-मोटे खेद को तो जगह ही नहीं मिलती।

खेद भी वी आई पी कैटेगरी और बी पि एल कैटेगरी का होता है। बी पि एल कैटेगरी का खेद सीज़नलहोता है, जो सिर्फ़ चुनावी समय में नेताजी के साथ दिखता है। बाक़ी पाँच सालों में मानो दुनिया में कुछ घटित ही नहीं होता। ऐसा लगता है जैसे हर जगह अच्छे दिन आ गए हों। जनता मजे के चूरन का फांका लगाए बैठी रहती है।

चुनाव आते ही आम आदमी की हर समस्या पर खेद प्रकट होता है। उसकी भूख, बेरोज़गारी, और महंगाई पर चढ़ी उपेक्षा की धूलएक बार फिर पोंछ दी जाती है। खेद प्रकट करने की घुड़दौड़ शुरू हो जाती है। सभी पार्टियाँ अपने-अपने घोड़ों पर दाँव लगाती हैं। जो खेद-सम्राट हो, मगरमच्छी आँसू बहाने में निपुण हो, वही आगे बढ़ता है।

खेद प्रकट करने के लिए मुद्दे खोजे जाते हैं। पुराने मुद्दे, जो कब्रों में दफ़्न थे, उन्हें उखाड़ा जाता है। कई मुद्दे ऐसे हैं, जिन पर सौ बार भी खेद प्रकट कर लो, लेकिन जनता को हमेशा नए लगते हैं। जैसे—संविधान की हत्या, इमरजेंसी, नेहरू, गांधी, सावरकर। इन मुद्दों को मिस्र की ममी की तरह राजनीतिक पैंतरेबाज़ी के रसायन में लपेटकर संरक्षित रखा जाता है, ताकि सड़े नहीं और ताज़ा लगें।

आलू और पेट्रोलके दाम तो खेद प्रकट करने के लिए बने ही हैं।

बी पि एल वाला खेद तभी प्रकट होता है, जब घटना अत्यधिक दुखद हो। जैसे—लोग थोक में मरें, कुचलें या दबें। नहीं तो खेद की श्रेणी में नहीं आएगा। न कोई अखबार वाला, न कोई समाजचिंतक, न कोई नेता—कोई भी अपनी बहुमूल्य खेद-निधि को ऐसे ही तो नहीं लुटाएगा।

हाँ, जब ज़रूरत होगी, तब खेद बाँटने से इन्हें कोई रोक नहीं सकता। वे पातालकी गहराई से भी खेद की वजह ढूँढनिकालेंगे। और अगर कुछ न मिला, तो गड़े मुर्दे उखाड़ लाएँगे। उन मुद्दों पर फिर से खेद प्रकट करेंगे, जिन पर पहले भी कई बार कर चुके हैं। पर खेद करेंगे, ज़रूर करेंगे।

दूसरा वीआईपी वाला खेद, यह रसूखदारों का खेद है। यह खेद तो ऐसा है कि अगर किसी वीआईपी आत्मा को ज़रा भी खरोंच लग जाए तो वह तुरंत प्रकट हो जाता है। नेताजी को ज़ुकाम हो जाए तो दस उनके चापलूस अपनी नाक रगड़कर नेताजी की नाक साफ़ करते हुए खेद प्रकट करने लगेंगे! राजनीति के कमानदारों और रसूखदारों के लिए तो देश का सेंसेक्स भी खेद प्रकट करने लग जाए। पीएम साहब के माथे पर चिंता की सलवटें पड़ जाएं, या

'भाइयो-बहनो' कहने भर की देर हो, तो सेंसेक्स खेद प्रकट करते हुए धराशायी हो सकता है। अगर किसी वीआईपी का कुत्ता भी मर जाए, तो खेद प्रकट करने के लिए पूरा शहर उमड़ पड़ता है।

सरकार को चाहिए कि एक खेद दिवस रख दे और सारे खेदों को एक ही दिन में निपटा दे। एक खेद स्मारक भी बनना चाहिए और एक खेद स्टेडियम भी! चुनाव में भी खेद प्रतियोगिता होनी चाहिए। जो प्रत्याशी खेद प्रकट करने में सबसे ज़्यादा स्कोर ले, उसे विजयी घोषित कर देना चाहिए। कम से कम, हर चुनाव के बाद ईवीएम की दुर्दशा पर खेद प्रकट करना तो बंद हो जाएगा।

खेद प्रकट करने में हर महकमे के अफसर भी सिद्धहस्त हैं। जिन फाइलों में रिश्वत का एक्सीलेटर लग जाए, वह आगे बढ़ जाएगी। वरना अफसरों की खेद के कीचड़ में धंसी रह जाएगी। 'खेद है, जनाब। आपकी परेशानी समझते हैं, पर क्या करें! कोशिश कर रहे हैं। सरकारी सिस्टम है, टाइम लगता है।'

पुलिस महकमा और वकीलमहकमा थोड़ा अलग है। ये खुद खेद प्रकट नहीं करते, बल्कि मुवक्किलों को खेद प्रकट करने पर मजबूर कर देते हैं। डॉक्टर लोग खेद प्रकट करने में माहिर हैं, 'खेद है, हम आपके मरीज़ को बचा नहीं सके।' इसके बाद मरीज़ के अटेंडेंट डॉक्टर के लिए खेद प्रकट करने लगते हैं, 'खेद है, डॉक्टर को पीटने से हम नहीं बचा सके।' अब क्या करें! परिजन तो समझ जाते हैं, लेकिन छुटभैये नेता, स्वार्थी गुंडे और मुआवज़ा मांगने वाले लोग भी तो खेद प्रकट करते हैं। और यह उनका अपना तरीका है खेद प्रकट करने का।

अखबा़र वाले भी खेद प्रकट करने में पीछे नहीं रहते। परिजन के साथ खेद प्रकट करते हैं और अस्पतालके डॉक्टरों को लानत भेजते हैं। अखबा़र वाले तो एक पन्ना इन खेद प्रकट करने वालों के लिए बचाकर रखते हैं। खेद प्रकट करने के साथ अगर अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन भी जोड़ सकें, तो लोग और ज़्यादा आकर्षित होते हैं। संवेदनाओं की गंगा में धंधे में लगी जंग धुलजाए, तो क्या बुराई है!

मुझे भी आजकलखेद का बड़ा सामना करना पड़ रहा है। रचनाएँ प्रकाशन के लिए भेजता हूँ, तो उधर से जवाब आता है, 'खेद है, आपकी रचना प्रकाशित न कर पाने के लिए।' उनके खेद से मेरी आत्मा मुझे धिक्कारती है। क्यों मैं उन्हें दिनभर खेद प्रकट करवाने में लगाए रखता हूँ? कितना कष्ट होता होगा! मैं भी अपनी रचनाओं के संपादकीय निर्णय की बलिचढ़जाने पर खेद प्रकट कर रहा हूँ।

मेल :
ID-drmukeshaseemit@gmail.com

वेद मिश्र की कवितायें

पहचानो सागर को..

मछली ना पहचाने सागर को,
जन्मी वहीं, उसे ही भूल गयी
खेली, खुदी, पली बड़ी
याद किया ना सागर को
पकड़े मछुआरा, गिरी रेत पर,
याद किये तबही सागर को

परमात्मा चारों ओर घेरे तुझे है
कितने अरग चढ़ा चुके हो
कितने मन्त्र तुम जाप चुके हो
कहाँ उसे तुम खोज़ रहे हो ?
रुको ज़रा, सुनो उसे, सुनाई देगा
ख़तम करो ये चंचल मन को
वो फिर दिखाई देगा
तर्क करोगे, छूट जायेगा
स्वीकार करोगे, पा जाओगे

शास्त्रों को ना शस्त्र बनाओ
दीया, फूल, शंकनाड, प्रसाद
सब उधार की
प्राथना के शब्द अपने,
भाव पर अपने नही

समझो और ऊपर उठ जाओ
सागर एक है, बादल अनेक
अहंकार छोड़ो, बस भींग जाओ
जान ना पाओगे, अनुभव होगा
जानने का कोई उपाय ना होगा
असीम है वो, कोई क्षितिज नही
खोज़ छोड़ो, बस महसूस करो
चेतना की नही
बाहर की बात, अंदर कुछ नही
वो तो है यहीं, तुम भागे हुए हो
खोज़ रहे हो, बेचैन फिरे हो

दो दोस्त थे..

दो दोस्त थे, सुखीराम और दुखीराम ,
पक्के दोस्त
हमेशा साथ रहते
पर दोनों थे विपरीत,

सुखीराम देखने में अति सुन्दर,
गठिला बदन, गुंग्रले बाल
चमकता चेहरा, सुन्दर मुस्कान

दुखीराम उतना ही डरावना, कुरूप
कुबाड़ बदन, काले दांत, बदबूदार शरीर
सुखी को सब पास बुलाते,
दुखी से सब डर जाते
सुखी को सब समझाते....
क्यों इसे साथ लिए फिरता है ?
तेरा और इसका क्या मेल ?
हटा इसको दूर

सुखी बोलता... ये मेरा साथी है
अगर ये नही तो मुझे कोई समझ नही पायेगा
हम बने ही साथ रहने के लिए
बुलाना है अगर तो दोनो को बुलाओ,
 नही तो दोनो से ही दूर हो जाओ

एक दिन सुखी को प्यारेलाल मिल गए
सुखी, प्यारेलाल में ऐसा मस्त हुए की
दुखी को ही भूल गए
सपने की दुनिया, एक-दूजे का साथ
जन्म-मरण की कसमें

पर सुखी कुछ ही दिनों में प्यारेलाल से ऊब गए,
जान छुड़ाई और प्यारेलाल को दुखी से मिलवा दिया
अब प्यारेलाल और दुखीराम अच्छे दोस्त हैं
 जहाँ प्यार, मोह, वहाँ दुख
हिम्मत सिंह का तो नाम सुना ही होगा
हिम्मत सिंह जब छोटे थे दुखीराम से बड़ा परेशान रहे
पर जैसे-जैसे हिम्मत बड़े होते गए ,
सुखीराम ने उसका हाथ थाम लिया
जहाँ हिम्मत, वहाँ सुख

पैसामल भी था एक
उसे लगता था की सुखी और वो ही अच्छे दोस्त हैं,
जब तक मैं हूँ, तब तक सुखी है,
सबको तो यही लगता था, पर असलीयत बहुत कम जानते थे,
बहुत घमंड था उसे अपनी दोस्ती पर

एक और थे, सुकून जी
सुखीराम का साथ, तो भी ऐसे
दुखीराम का साथ, तो भी ऐसे
दोनों के मिलने -बिछड़ने से कोई फ़रक नही था इन्हे

ऐसे ही, दोनो, सुखी-दुखी, बहुतों से मिलते -बिछड़ते रहे
कभी आते, कभी चले जाते
पर रहे हमेशा साथ.....

– वेद मिश्र (गुडगाँव)

छवि पर पाँच कविताएं

–रामकिशोर मेहता

छवि-1
सुना है
चोरों के लिए
इस्लाम में
हाथ कटवा देने की
सजा मुकर्रर है।

सुना है
उस मुसलमान बादशाह ने
कटवा दिए थे
तुम्हारे भी दोनों हाथ।

क्या चुराया था तुमने
ताजमहल के रचनाकार ?
शायद बादशाहों पर कोई
नियम लागू नहीं होता।

उनके लिए नहीं होती
कोई कुरान
कोई हदीस
कोई बाइबिल
कोई गीता।

सर्वोपरि होती हैं
उनकी चाहतें।
उसे चिंता थी
कि कहीं इतिहास में
तुम्हारी छवि
उसकी छवि से
बेहतर ना दिखने लगे।
वह इतिहास में
अमर हो जाना चाहता था
ताजमहल के साथ।

लगता है
फिर से
पैदा हो गया है शहंशाह
उसे भी चिंता है
अपनी छवि की।

उसका हुक्म है
हर उजले चेहरे पर
पोत दी जाए कालिख
ताकि किसी की भी छवि
शहंशाह की छवि से
बेहतर न हो।

छवि -2
मैं जो हूँ
वह नहीं हूँ मैं
वह तो बिल्कुल नहीं
जो मैं अपने आप को
समझता हूँ
और वह भी नहीं हूँ मैं
जो मैं चाहता हूँ
कि आप समझे मुझे।

मैं वह भी नहीं हूँ
कि जो अपने आप को
वैसा समझ बैठूँ
जैसा कि आप मुझे
समझा रहे हैं
कि मैं ऐसा या वैसा हूँ
मैं शायद
अपने होने की बजाय
आप के लिए
एक छवि मात्र हूँ।

छवि -3
एक दिन मैंने
एक मासूम बच्चे की तरफ़ देखा
ओर बच्चे ने मेरी तरफ
फिर उसने
मुझे अपने दृश्य पटल से
ओझल करने के लिए
जल्दी ही मुंह फेर लिया।
चिपक गया माँ से।

सोचता हूँ
उसने मुझे क्या समझा होगा?
कोई भयानक जीव
कोई हौवा।

दूसरे, तीसरे दिन
जब मैं फिर मिला उससे
उसे लगा कि मैं
कुछ कुछ
उन्हीं लोगों जैसा हूँ
जो उसके आस पास है।

उसने कौतूहल से देखा मुझे
तब उसकी आंखों में
असुरक्षा का भाव नहीं था।

कुछ और दिनों तक
इसी तरह मिलता रहा उससे।
बदल गया मैं उसके लिए
वह मुस्करा उठा
मुझे देख कर हाथ बढ़ाने पर
आ भी जाता मेरी गोद में

उसकी माँ ने
मेरी तरफ इशारा कर
बताया उसे कि मैं 'दद्दा' हूँ
एक दिन

बिना उसकी तरफ देखें
गुजर गया मैं उसके पास से
उसने मीठी सी आवाज दी 'दद्दा'
पता नहीं
कौन कौन सी छवि
बनी रही होगी मेरी
उस मासूम के मन में।

छवि - 4
देखा गया है
कि वास्तविकता से
कहीं ज्यादा
प्रभावशाली होती है छवि।

स्पष्ट दृष्टि
कड़ी मेहनत
वर्षों का समय
विशाल संसाधन
खर्च हो जाते
किसी को 'पप्पु'
स्थापित करने में।

बड़ी ही
क्षण भंगुर होती है छवि
जरा से में ही
टूट जाती है।

छवि - 5
ईमानदारी और सत्यनिष्ठा
से कमाई
उज्ज्वल छवि में लगा
एक छोटा सा दाग भी
खराब कर जाता है
सारी मेहनत को।

कुछ लोगों का कहना है
कि ऐसा दाग
एक ब्यूटी स्पॉट होता
बना देता है देवता को आदमी
गुण दोषों के साथ।

बी -11, शिवालय बंग्लाज,
सरकारी ट्यूबवेल के पास,
बोपल , अहमदाबाद 380058

केवल कृष्ण पाठक की दो कविताएँ

विश्व का हो कल्याण

चाहा भारत की संस्कृति ने, सदा ही विश्व का हो कल्याण,
विश्व संविस्कृति है वास्तव में, धरती वेद की कीर्तिमान।

जन्में विश्व में सभी प्राणी ही, मूलरूप में तो थे एक ,
रंग- रूप में खान पान में, वेश - भूषा में बने अनेक।

चार बेटे हों एक बाप के, अलग अलग सब के स्वभाव ,
ऐसा पनपा भाव पृथ्वी पर, वर्ण जाति को मन में टेक ।

पुरातत्व इतिहास खोज में, यही हमें होता है भान ,
विश्व संस्कृति है वास्तव में, धरती वेद की कीर्तिमान।

भारत कभी निभाता था, भूमिका विश्व की था सिरमोर ,
भाषा एक थी बहुत देशों की, निष्ठावान थे धर्म की और ।

सभी एक थे, ध्यान सदा था, सच्चाई पर नित्य चलना,
जीवन में चाहे कितनी भी,कठिनाइयां आजायें घोर।

चक्रवर्ती साम्राज्य चला था, तब अपनी भूमि को जान, -
विश्व संस्कृति है वास्तव में धरती वेद की कीर्तिमान।

भारत के सब समर्थ ऋषिगण, करते रहे धर्म-प्रचार,
शक्ति और प्रयोग शस्त्र का, देते थे ज्ञान भण्डार।

वीर पुरुष इस धरती पर,बलवान और थे शस्त्रधारी,
ज्ञान कर्म और रहन- सहन में, रहे समर्थ आचार विचार।

विश्व संघ की स्थापना करके, फूंका विश्व में शान्ति-गान ,
विश्व संस्कृति है वास्तव में, धरती वेद की कीर्तिमान।

कालान्तर में धीरे- धीरे, स्वार्थ परायण हो गए थे लोग,
भेद- भाव और उँच- नीच, लग गए सबके मन में रोग ,

भौगोलिक ऐतिहासिक कारण,परिवर्तन आया सबके मन में,
करने लग गए सभी विश्व में, भेद वर्ण- जाति उपयोग।

मूलउद्गम संस्कृति -भारती,इसका सब को भी है भान,
विश्व संस्कृति है वास्तव में, धरती वेद की कीर्तिमान।

बड़ी बात होगी यदि हम अपनी, शक्ति को सब पहचानें,
धर्म संस्कृति योग- ध्यान से,ज्ञान विज्ञान को हम जानें।

विश्व के लोगों को हम सब दें, भ्रातृ-प्रेम का ही सन्देश,
बांधें विश्व को एक सूत्र में,विश्व- एकता को जानें।

पनपे नहीं उदंडता किसी में, और कभी न हो अभिमान,
विश्व संस्कृति है वास्तव में धरती वेद की कीर्तिमान।

माँगना मरना है लेकिन

फिर भी हिम्मत के बिना.माँगा नहीं जाता किसी से ।

जागना मुश्किलहै लेकिन
फिर भी चिन्ता के बिना जागा नहीं जाता किसी से ।

सोना भी मुश्किलहै लेकिन
फिर भी बिन प्रसन्ता के सोया नहीं जाता किसी से ।

जीना तो है सब को लेकिन
फिर भी आत्मोपलब्धि के जिया नहीं जाता किसी से ।

मौत तो आती है लेकिन
फिर भी हो प्रसन्न चित्त तो मरा नहीं जाता किसी से।

- संपादक रवींद्र ज्योति मासिक,343/19,आनंद निवास,
गीता कालोनी ,जींद 126102 (हरियाणा) मोब.9518682355
इ मेल- ravinderjyotijind@gmail.com

मुस्लिम विमर्श ! मगर अधूरा

–ज़ाहिद ख़ान

'अधूरे' तेलुगु कहानी संग्रह है, जिसका हिंदी अनुवाद डॉ. एस.के. साबिरा ने किया है। संग्रह की सारी कहानियाँ मुस्लिम विमर्श पर केन्द्रित हैं। इन कहानियों को अगर देखें, तो यह दो तरह की हैं। पहले हिस्से में तेलुगु मुस्लिम समाज के अंदर की कहानियाँ हैं। जिसमें निम्न-मध्यम वर्ग मुस्लिम परिवारों की ग़रीबी, बदहाली, बेरोज़गारी, वंचना, अशिक्षा, धार्मिक रूढ़ियाँ, पर्दा प्रथा, दहेज़ प्रथा, जहालत को निशाने पर लिया गया है। ख़ास तौर से मुस्लिम समाज में औरतों के जो हालात हैं, उन पर तफ़्सीली नज़र है। 'छोटी बहन', 'मुहब्बत 1424 हिजरी', 'मजबूर', 'भड़कता चिराग़', 'कबूतर', 'उर्स', 'क़िबला' और 'जीव' इसी क़िस्म की कहानियाँ हैं। किताब का दूसरा हिस्सा 'हिंदू-मुस्लिम' समुदायों के आपसी संबंधों, अलगाव, तनाव और अविश्वास पर आधारित है जिसमें 'वेजिटेरियन्स ओनली', 'दस्तर', 'दावा' और 'वतन' को रखा जा सकता है। किताब की भूमिका 'अधूरे जीवन की दास्ताँ' में अनुवादक एस.के. साबिरा लिखती हैं, ''विश्व स्तर पर हाशिए पर केन्द्रित मुस्लिम जीवन साहित्य की विभिन्न विधाओं के केन्द्र में रहा है।'' लेखिका का यह तथ्य सिरे से ग़लत है। इस बात में कतई सच्चाई नहीं। जहाँ तक हिंदी साहित्य की बात है, मुस्लिम जीवन साहित्य की तमाम विधाओं में कहीं दिखाई नहीं देता। अगर कहीं दिखाई भी देता है, तो उसमें मुस्लिम समाज की नकारात्मक छवि पेश की जाती है। सिर्फ़ साहित्य में ही नहीं, सिनेमा में भी कमोबेश यही हालात हैं। एस.के. साबिरा हिंदी के मुस्लिम रचनाकारों की बात करती हैं, लेकिन डॉ. राही मासूम रज़ा, शानी,

इसराइल, इब्राहीम शरीफ़ और बदीउज़्ज़माँ आदि को भूल जाती हैं, जिनकी रचनाओं की आज भी हिंदी साहित्य में बेहद अहमियत है। हिंदी साहित्य में जब भी मुस्लिम विमर्श की बात होती है, इन पर ज़रूर बात होती है।

संग्रह की 'छोटी बहन', 'मुहब्बत 1424 हिजरी', 'मजबूर', 'कबूतर', 'उर्स' और 'क़िबला' आदि कहानियों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर दहेज़ समस्या केन्द्र में है। मुस्लिम समाज में लड़कियाँ पढ़ना और अपनी ज़िंदगी में कुछ आगे बढ़ना चाहती हैं। लेकिन घरवालों की चिंता, सिर्फ़ उनकी अच्छे घरानों में शादी तक महदूद है। उनकी चाहत है बेटियों की शादी नौकरी-पेशा लड़कों से हो, ताकि वे अपनी ज़िंदगी अच्छी तरह से गुज़ार सकें। अक्सर ग़रीबी इनमें आड़े आती है। नौकरी-पेशा लड़के बिना पैसे या दहेज़ के शादी नहीं करते। दीगर समाजों की तरह मुस्लिम समाज में भी आज दहेज़ एक विकराल समस्या बन गया है। निम्न मध्यम वर्ग एक तरफ़ बुनियादी सुविधाओं से जूझ रहा है, तो दूसरी ओर जैसे ही लड़कियाँ जवान होती हैं, शादी की समस्या उनके सामने आ जाती हैं नतीजा ज़्यादातर लड़कियाँ अपनी ज़िंदगी से समझौता कर लेती हैं। अच्छे जीवन और मनपसंद साथी के साथ शादी, उनकी तमाम हसरतें दिल में ही टूट जाती हैं। 'छोटी बहन' की नायिका जानी बेगम, 'मुहब्बत 1424 हिजरी'-सुल्ताना, 'मजबूर' की नायिका सलमा हालात से मजबूर होकर, आख़िरकार परिवार के मुताबिक़ शादी कर लेती हैं। कोई इंक़लाबी पहलू इन कहानियों में नज़र नहीं आता। नायक और नायिका दोनों के किरदार, पाठकों पर अपना कोई असर नहीं छोड़ते। कहानी 'कबूतर' की नायिका फ़ातिमा आपा अपनी बेटी की शादी के लिए अपने सभी रिश्तेदारों से जैसे-तैसे पैसे इकट्ठा करती हैं, लेकिन तय रकम नहीं जोड़ पातीं और वह रिश्ता टूट जाता है। कहानी का अंत सकारात्मक है, सलीम उनकी लड़की ग़ौसिया से बिना दहेज़ के निकाह पढ़ाने पर राज़ी हो जाता है। 'उर्स' कहानी में भी नायक-नायिका का मिलन नहीं हो पाता। नायक यूसुफ़ वह ज़रूरी हिम्मत नहीं जुटा पाता और नायिका रुखसाना की दूसरी जगह शादी हो जाती है।

आज समाज में जिस तरह का साम्प्रदायिक माहौल बना दिया गया है, उससे महानगर से लेकर छोटे-छोटे कस्बों-शहरों में भी मुस्लिमों को किराये का मकान मिलने में परेशानी आने लगी है। कहानी 'वेजिटेरियन्स ओनली' इस समस्या को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से उठाती है। जहाँ कभी

खान-पान को लेकर तो कभी किसी और वजह से मुस्लिमों को मकान देने से इंकार कर दिया जाता है। मुस्लिम पति-पत्नी को आख़िर में एक मकान मिलता है, लेकिन बाद में मालूम चलता है कि मकान मालिक ख़ुद अछूत है। दलित है। कहानी का अंत इस अर्थपूर्ण संवाद के साथ होता है, ''दलितों के लिए कोई अछूत नहीं है। इसका मतलब दलित ही असल में मनुष्य हैं। बाक़ी के लोग ही अछूत हैं न!'' एक समय था, जब भारतीय समाज में दो बड़े समुदायों के बीच गहरा साम्प्रदायिक सौहार्द्र था। धार्मिक सहिष्णुता थी। लोग एक-दूसरे से मिल-जुलकर रहते थे। एक-दूसरे के दुःख, परेशानियों में काम आते थे। लेकिन साम्प्रदायिक राजनीति ने दो समुदायों के बीच एक बड़ी खाई बना दी है। कहानी 'दस्तर' मुस्लिमों के साथ साम्प्रदायिक भेदभाव और उनके साथ अछूतों जैसे बर्ताव को सामने लाती है। कहानी तीन दोस्तों की है, जो मिल-जुलकर रहते हैं। उनकी दोस्ती में धर्म कभी आड़े नहीं आता। लेकिन मुस्लिम किरदार उस वक़्त हैरान रह जाता है, जब धर्म के नाम पर उसका अपमान किया जाता है। उसके साथ अस्पृश्यों जैसा व्यवहार किया जाता है।

'वतन' उन मुस्लिम नौजवानों की कहानी है, जो बेरोज़गारी से तंग आकर खाड़ी के मुल्कों में काम के लिए जाते हैं। ताकि उनके परिवार ग़रीबी से बाहर निकल सकें। वह अपनी बाक़ी ज़िंदगी अच्छी तरह से गुज़ार सकें। कुछ साल काम कर यह नौजवान अपने घर वापस आ जाते हैं और अपने कमाये हुए पैसे से नया बिजनेस खोल लेते हैं। इस समस्या का एक और पहलू है, जिस पर कि कभी बात नहीं होती। इन नौजवानों के मार्फ़त एक बड़ी विदेशी मुद्रा देश में आती है, जो हमारी अर्थव्यवस्था को मज़बूत करती है। बावजूद इसके मुसलमानों को इसके लिए सबसे ज़्यादा तोहमतें झेलनी पड़ती हैं कि उन्हें अपने मुल्क से मुहब्बत नहीं। इसलिए वे दूसरे देश चले जाते हैं। सुरेश, यादय्या और सुल्तान जिगरी दोस्त हैं। अपने परिवार को ग़रीबी और क़र्ज़ से उबारने के लिए सुल्तान जब दुबई जाने का फ़ैसला करता है, तो उसके दोस्त उस पर कई तरह की तोहमतें और इल्ज़ाम लगाते हैं। लेकिन जब सुरेश एक बेहतर ज़िंदगी की आस में हमेशा-हमेशा के लिए अमेरिका बसने का फ़ैसला करता है, तो सुल्तान अपने अवचेतन में उसके दोगले बर्ताव पर तीखा कमेंट करता है। उसे आईना दिखलाता है। और कहानी का अंत हो जाता है।

'दावा' सामान्य कहानी है। इस कहानी का उद्देश्य क्या है? समझ से परे है। वहीं 'जीव' एक दिलचस्प कहानी है। जिसमें कहानी के मुख्य किरदार को एहसास होता है कि उसके जिस्म से जान निकल गई है और वह लाश बनकर रह गया है। जबकि उसके परिवारवालों को लगता है कि वह गहरी नींद में है। कोई उस पर तवज्जो नहीं देता। लेकिन जब सबको मालूम चलता है कि वह मर गया है, तो पूरा घर ग़म में डूब जाता है। दूर के रिश्तेदार और दोस्त उसके जनाज़े में शिरकत के लिए घर पहुँचने लगते हैं। यह सारा मंज़र देखकर, वह किरदार जज़्बाती हो जाता है। लेकिन कहानी का अंत एक अलग तरह से होता है, जिसको बयाँ कर मैं कहानी का मज़ा खराब नहीं करना चाहता। शिल्प और ट्रीटमेंट दोनों के लिहाज़ से यह कहानी पाठकों को मुतास्सिर करेगी। 'क़िबला' उन सपनों के टूटने की कहानी है, जो परदेस जाने से लगाए जाते हैं। कहानी का अहम किरदार उस्मान दुबई जाने के लिए अपना सब कुछ बेच देता है, लेकिन घर से निकलने के बाद उसकी कोई खैर-खबर नहीं आती। ख़ुशी की तलाश में उसका परिवार और भी ग़ुर्बत मे चला जाता है। देश में न जाने कितने उस्मान हैं, जो बेहतर भविष्य के लिए अपनी ज़िंदगी दांव पर लगा रहे हैं। जिन पर किसी की निगाह नहीं जाती। कहानीकार स्कैबाबा ने इस समस्या की गहराई में जाकर, इन कहानियों को बुना है, जो आए दिन अखबार की सुर्खियाँ बनती रहती हैं। लेकिन तमाम सरकारें जिससे बेपरवाह हैं। एक लिहाज़ से कहें, तो कहानी का शीर्षक 'अधूरे' एक रूपक है, इंसानी ज़िंदगी के अधूरेपन का। तमाम कोशिशों के बाद भी उसे मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता। कहीं ज़मीं, तो कहीं आसमाँ नहीं मिलता।

किताब में प्रूफ़ की कमी साफ़ दिखाई देती है। कई जगह शब्द एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, तो कहीं कुछ शब्द ग़लत लिखे गए हैं। यहाँ तक कि अंग्रेज़ी शब्द की वर्तनी भी ठीक नहीं। मसलन चौदहवीं-चौधवीं, चैट-चाट, बैचमेट-ब्याचमेंट, फ़ामिलि-फैमिली आदि। जैसा कि मैंने कहा, संग्रह की सारी कहानियाँ मुस्लिम बैकग्राउंड पर हैं। अनुवादक को कहानियों का अनुवाद करते वक़्त यह खय़ाल करना चाहिए था कि भाषा की तारतम्यता बनी रहे। हिंदी समाज आम हिंदुस्तानी लफ़्ज़ों से अच्छी तरह वाक़िफ़ है। बावजूद इसके अनुवादक ने 'खैरियत' की जगह कुशल मंगल, बीवी-पत्नी, गुस्ल-स्नान, फूफी-बुआ हिंदी शब्दों का इस्तेमाल किया है। संग्रह की एक-दो कहानियों में मुस्लिम किरदार अपने बड़ों के पैर छूते दिखाये गए हैं, ज़ाहिर है कि उत्तर भारतीय मुसलमानों के लिए यह हैरानी की बात होगी। क्योंकि मुसलमानों में यहाँ इस तरह की रिवायत कहीं नज़र नहीं आती। किताब की कई कहानियों में महिला किरदार का नाम 'शाहीन' है, ऐसा लगता है कि कथाकार को इस नाम से कुछ ज़्यादा ही अपनाइयत है, यही वजह है कि बार-बार यह नाम रिपीट हुआ है। किताब की ख़ासियत की यदि बात करें, तो किताब के संवादों में हैदराबादी ज़ुबान की टोन का इस्तेमाल है। अनुवादक ने न सिर्फ़ संवादों में हैदराबादी ज़ुबान का लहजा रखा है, बल्कि तेलुगु मुस्लिम समाज में रोज़मर्रा में बोले जाने वाले लफ़्ज़ों 'खव़ाली', 'खर्ज़', 'मक़मली', 'कंजीरे', 'क़र्ज़ उसूल', 'तक़बा', 'मित्ती',

'पाव बंटे', 'पाड़ दुनिया', 'चलेंगी', 'आरींव', 'अब्बीच' को ज्यों का त्यों रखा है। हैदराबादी ज़ुबान का लहजा और जगह-जगह इन लफ़्ज़ों के प्रयोग से पूरा परिवेश हमारी आंखों के सामने आ जाता है। इसके साथ ही इन कहानियों में तेलुगु मुस्लिम समाज के रीति-रिवाज, शादी-ब्याह, तमाम धार्मिक परंपराओं की जानकारियाँ भी हिंदी पाठकों को मिलती हैं, जिनसे कि वह अभी तक अंजान था।

किताब की भूमिका में भले ही यह दावा किया गया हो कि प्रस्तुत संग्रह में 'मुस्लिम विमर्श' की कहानियाँ हैं, लेकिन यह अधूरा विमर्श है। किताब की ज़्यादातर कहानियाँ दहेज़ समस्या को ही रेखांकित करती हैं। कहानियों को पढ़कर, ऐसा लगता है कि मुस्लिम समाज में सबसे बड़ी समस्या लड़कियों की शादी है। बाक़ी समस्याएँ उनके लिए कोई मायने नहीं रखतीं। जबकि दीगर समाजों की तरह मुस्लिम समाज भी रोज़-ब-रोज़ अनेकानेक समस्याओं से जूझ रहा है। संग्रह की कहानियों को पढ़कर एहसास होता है कि दहेज़ के अभाव में मुस्लिम लड़कियों की ज़िंदगी तबाह हो रही है। कथाकार स्कैबाबा इन समस्याओं को रेखांकित तो करते हैं, लेकिन इन कहानियों में कहीं कोई समाधान नहीं है। समाज को बेहतर बनाने के लिए उनके पास कोई आइडिया, कोई सोच नहीं है। जिन परिवारों की कहानियाँ कही गई हैं, वे अपनी बदहाली के लिए ख़ुद ही ज़िम्मेदार हैं। आर्थिक परेशानियों के बावजूद बड़े परिवार का होना, शिक्षा का अभाव, धार्मिक रुढ़ियों की जकड़न और कोई सामाजिक सुधार इस समाज में कहीं दिखाई नहीं देता। फिर शिकायत किससे? कहानियों में मुस्लिम समाज का यथार्थ भर है, हालात से लड़ने की कहीं कोई जद्दोजहद नहीं दिखाई देती। यही वजह है कि अधिकतर कहानियों का अंत अधूरा दिखाई देता है। कहानियाँ पाठकों के दिल पर एक गहरी उदासी छोड़ जाती हैं। जबकि कहानी का मक़सद पाठकों को एक सशक्त संदेश तो देना होता ही है, वह उन्हें सोचने पर भी मजबूर करे। वरना कहानी कहानी नहीं, एक रिपोर्ताज भर रह जाती है।

'अधूरे' (तेलुगु कहानी संग्रह),
लेखक : स्कैबाबा,
अनुवाद : एस.के. साबिरा,
मूल्य : 220, पेज : 113,
प्रकाशन : प्रलेक प्रकाशन,
मुम्बई-401303 (महाराष्ट्र)

सम्पर्क : महल कॉलोनी, शिवपुरी (म.प्र.) मोबाइल : 94254 89944

जन सहायता हास्पिटल

अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त

(आकस्मिक सेवा निःशुल्क उपलब्ध)

24/7
EMERGENCY SERVICE

कटरियाँ (इन्डस्ट्रियल एरिया के सामने, नेशनल हाइवे-2) रामनगर मार्ग, वाराणसी

मो0- 9984499616, 9415441990

प्रधानमंत्री ने छत्तीसगढ़ में एनटीपीसी की 800 मेगावाट क्षमता वाली सीपत परियोजना की आधारशिला रखी

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एनटीपीसी की सीपत सुपर थर्मल पॉवर परियोजना चरण-III (1x800 मेगावाट) की आधारशिला रखी।

यह परियोजना 9791 करोड़ रुपये के निवेश से विकसित की जा रही है, जो गृह राज्य, छत्तीसगढ़ एवं गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गोवा जैसे राज्यों को सस्ती और विश्वसनीय ऊर्जा की आपूर्ति करेगी।

प्रधानमंत्री द्वारा छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में एक सार्वजनिक कार्यक्रम में 33,700 करोड़ रुपये से अधिक लागत वाली ऊर्जा, तेल एवं गैस, रेल, सड़क, शिक्षा और ग्रामीण आवास से संबंधित अनेक विकासात्मक एवं परिवर्तनकारी परियोजनाओं की आधारशिला रखी गई एंव उन्हें राष्ट्र को समर्पित किया गया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, केंद्रीय विद्युत एवं आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल, छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष डॉ रमन सिंह, केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री, तोखन साहू, छत्तीसगढ़ सरकार के मंत्री, सांसद एवं विधायक भी मौजूद थे।

एनटीपीसी सीपत की पिट-हेड ऊर्जा परियोजना सर्वाधिक ऊर्जा निर्माण क्षमता के साथ अत्याधुनिक अल्ट्रा- सुपर क्रिटिकल टेक्नोलॉजी पर आधारित है। सीपत III (1x800 मेगावाट) बिजली संयंत्र शुरू हो जाने के बाद सीपत एसटीपीएस की कुल स्थापित क्षमता 3,780 मेगावाट तक पहुंच जाएगी।

यह परियोजना सतत विकास, ऊर्जा सुरक्षा और सामाजिक-आर्थिक विकास के प्रति एनटीपीसी की प्रतिबद्धता का उदाहरण है। छत्तीसगढ़ में ऊर्जा के बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाते हुए यह परियोजना भारत की विकास यात्रा में राज्य की भूमिका को मजबूत करेगी तथा क्षेत्र में आर्थिक प्रगति लाकर लोगों का उज्जवल भविष्य सुनिश्चित करेगी। ●

बालको के 'उन्नति उत्सव' कार्यक्रम में उत्कृष्ट योगदान के लिए महिलाओं का सम्मान

वेदांता समूह की कंपनी भारत एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (बालको) ने विश्व महिला दिवस-2025 के अवसर पर 'उन्नति परियोजना' के अंतर्गत 'उन्नति उत्सव' का आयोजन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कोरबा की महापौर संजू देवी राजपूत तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में बालको लेडिज क्लब की अध्यक्ष श्रीमती मनीषा कुमार उपस्थित थी। उत्सव में 1,200 से अधिक स्व सहायता समूह की प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों एवं मुख्य अतिथि की उपस्थिति में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए 16 लोगों को सम्मानित किया गया। इन सभी ने अपने योगदान से राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर विशिष्ट पहचान बनाई है।

उत्सव में जिला प्रशासन के सहयोग तथा बालको की सामुदायिक विकास परियोजनाओं के तहत 10 खाद्य और 2 आभूषण स्टॉल लगाए गए। इस मंच ने स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को अपने व्यवसाय का विस्तार करने का अवसर प्रदान किया। मेहंदी लगाने एवं चाक की मदद से मिट्टी के बर्तन बनाने का स्टॉल, आंगतुकों के लिए मुख्य आकर्षण का केंद्र था। पारंपरिक शिल्प कला के प्रदर्शन के साथ महिलाओं एवं बच्चों के लिए इंटरैक्टिव खेल, सांप-सीढ़ी, तीरदांजी और रस्साकशी आदि शामिल था। इसमें उत्कृष्ट भागीदारी के लिए पुरस्कार भी दिए गए हैं।

कोरबा की महापौर सभी महिलाओं से मिली और स्टॉलों का निरीक्षण किया। इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में महिलाओं ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दीं। वेदांता स्किल स्कूल की लड़कियों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम, 'तेजी से कार्रवाई करें' के अतंर्गत फ्लैश मॉब किया जो लैंगिक समानता और सशक्तिकरण के सम्मोहक संदेश पर आधारित था। छत्तीसगढ़ के कर्मा नृत्य तथा राजस्थानी नृत्य ने समावेशिता और सांस्कृतिक विविधता का संदेश देते हुए सभी का मनोरंजन किया।

उन्नति उत्सव कार्यक्रम यह सुनिश्चित करता है कि महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता एवं अभिव्यक्ति का अवसर मिले। यह आयोजन समावेशी, आत्मनिर्भर और प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए बालको की अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। पुरस्कृत महिलाओं ने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में बालको के योगदान को उत्कृष्ट बताया। महिलाओं ने यह भी बताया कि बालको की मदद से उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव हुए हैं। खुद आत्मनिर्भर होकर वे परिवार की मदद करने में सक्षम हुई हैं। अनेक सामाजिक मिथकों और कुरीतियों को समाप्त करने में उनकी सक्रिय भागीदारी है।

बालको के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं निदेशक श्री राजेश कुमार ने उन्नति उत्सव की प्रशंसा करते हुए कहा कि हम सभी अपने समाज को सकारात्मक रूप से बदलने के लिए एकजुट हैं। महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें अनेक अवसर बालको की परियोजना उन्नति के जरिए उपलब्ध कराए गए हैं। उन्होंने महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि वे स्वयं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाएं। इससे उन्हें समाज में अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने में मदद मिलेगी। सीईओ श्री राजेश कुमार ने कहा कि महिलाएं अपने परिवार, समाज और देश को बुलंदियों पर ले जाने में अपना योगदान दें। बालको प्रबंधन महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कटिबद्ध है।

मुख्य अतिथि संजू देवी राजपूत ने सीएसआर में बालको के उल्लेखनीय प्रयास की सराहना करते हुए उन्नति परियोजना की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यह पहल स्थायी आजीविका और सशक्तीकरण को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा हमें स्व सहायता समूह की महिलाओं को सरकारी योजनाओं से जोड़ने

के लिए जागरूक करना चाहिए। उन्नति पर विश्वास जताते हुए उन्होंने कहा कि महिलाओं की रचनात्मक भागीदारी से यह परियोजना नई ऊंचाइयों को छूएगी।

उन्नति उत्सव में वेदांता स्किल स्कूल, मोर जल मोर माटी, नयी किरण, आरोग्य, उन्नति, प्रोजेक्ट कनेक्ट एवं नंद घर परियोजनाओं के स्टॉल भी शामिल थे। जहां पर बालको के सामुदायिक विकास की विस्तृत जानकारी दी जा रही थी। उत्सव में निशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं दवाईंयां भी दी गई। प्रोजेक्ट उन्नति का उद्देश्य महिलाओं को स्व सहायता समूह में शामिल करने और उन्हें सशक्त बनाने तथा उद्यमिता और स्थायी आजीविका के निर्माण के लिए उनकी क्षमताओं और कौशल को निखारने पर केंद्रित है। 534 से अधिक एसएचजी, जिनमें 5,800 से अधिक महिलाएं शामिल हैं, जो परियोजना के विभिन्न प्रशिक्षण से लाभान्वित हो रही हैं। माइक्रो एंटरप्राइज द्वारा फूड ट्रक 'उन्नति कैफे ऑन व्हील्स' और उना टी शॉप 'चाय बिहान' का कलेक्ट्रेट में संचालित किया जा रहा है। इन परियोजना के जरिए महिलाओं को अनेक गतिविधियों से जोड़ा गया है जो उन्हें आजीविका प्राप्त करने और आत्मनिर्भर बनने में सहायक बना। परियोजना का संचालन स्वयंसेवी संगठन जीपीआर स्ट्रैटेजीज एंड सोल्यूशंस के सहयोग से किया जा रहा है। ●

हरीश दुहन ने संभाला एसईसीएल सीएमडी का पदभार

हरीश दुहन ने एसईसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (सीएमडी) के रूप में पदभार ग्रहण कर लिया है। एसईसीएल मुख्यालय आगमन पर निदेशक मण्डल, सीवीओ, विभागाध्यक्षों अधिकारी-कर्मचारियों द्वारा उनका आत्मीय स्वागत किया गया। इस अवसर पर एसईसीएल की सुरक्षा टुकड़ी द्वारा उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर के साथ सम्मानित किया गया।

इससे पहले श्री दुहन सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड में निदेशक तकनीकी (संचालन) के पद पर कार्यरत थे। हरीश दुहन कोयला खनन क्षेत्र में 34 वर्षों से अधिक का व्यापक अनुभव रखते हैं। उन्होंने अपनी स्नातक उपाधि नागपुर विश्वविद्यालय से माइनिंग इंजीनियरिंग में प्राप्त की। श्री दुहन ने वर्ष 1989 में वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड से कोल इंडिया लिमिटेड में अपनी सेवाओं की शुरुआत की। उनके पास फर्स्ट क्लास माइन

मैनेजर सर्टिफिकेट तथा प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा की उपाधि भी है।

एसईसीएल का सीएमडी बनने से पहले, श्री दुहन सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) में निदेशक तकनीकी (संचालन) के रूप में कार्यरत थे। इसके अलावा, उन्होंने नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एनसीएल) की निगाही परियोजना में एरिया जनरल मैनेजर तथा कॉर्पोरेट प्रोजेक्ट प्लानिंग विभाग के महाप्रबंधक के रूप में भी अपनी सेवाएं दी हैं।

श्री दुहन को पर्यावरण-हितैषी फर्स्ट माइल कनेक्टिविटी परियोजनाओं के कार्यान्वयन, डिजिटलीकरण तथा सौर ऊर्जा परियोजनाओं के विकास में विशेष अनुभव प्राप्त है।

श्री हरीश दुहन के एसईसीएल के सीएमडी पदभार ग्रहण करने के अवसर पर पूरी कंपनी में हर्ष का माहौल है। एसईसीएल परिवार को विश्वास है कि उनके कुशल नेतृत्व में कंपनी नए ऊँचाइयों को प्राप्त करेगी और ऊर्जा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

इफको फूलपुर में एमडी डॉ. उदय शंकर का भव्य स्वागत

इफको के प्रबंध निदेशक डॉ. उदय शंकर अवस्थी के आगमन पर उनका भव्य स्वागत किया गया। डॉ. अवस्थी को हाल ही में प्रतिष्ठित 'रॉसडेल पायनियर अवॉर्ड' और 'फर्टिलाइज़र मैन ऑफ इंडिया' के सम्मान से नवाजा गया है। उनकी इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर इफको फूलपुर इकाई के अधिकारियों, कर्मचारियों और स्थानीय ग्राम प्रधानों ने हर्ष व्यक्त किया। डॉ. अवस्थी का स्वागत समारोह बाबूगंज के नजदीक भुलई का पूरा गांव में आयोजित किया गया, जहां इफको प्लांट के आसपास के ग्राम प्रधानों ने उनका अभिनंदन किया। इस स्वागत समारोह में महिला ग्राम प्रधानों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया और उनके नेतृत्व की सराहना की।इस अवसर पर ग्रामीणों और पंचायत प्रतिनिधियों ने डॉ. अवस्थी को सम्मानित किया और इफको द्वारा किसानों की समृद्धि और कृषि क्षेत्र के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की।

डॉ. अवस्थी ने अपने संबोधन में कहा, 'यह सम्मान पूरे इफको परिवार और भारत के मेहनतकश किसानों को समर्पित है। हमारा लक्ष्य देश के किसानों को सशक्त बनाना और कृषि क्षेत्र में नवाचारों को बढ़ावा देना है।' इफको फूलपुर इकाई के अधिकारियों, कर्मचारियों और स्थानीय ग्रामीणों ने इस अवसर पर उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया और उनके मार्गदर्शन में संगठन की निरंतर प्रगति के प्रति विश्वास जताया। इस दौरान वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक इफको फूलपुर इकाई संजय कुदेशिया, जनसम्पर्क अधिकारी स्वयम् प्रकाश, ग्राम प्रधान तिसौरा रेनू देवी पटेल, ग्राम प्रधान पुरे का भुलई पुष्पा देवी, ग्राम प्रधान सराय अब्दुल मलिक मंजू देवी, ग्राम प्रधान पाली निशा देवी, ग्राम प्रधान बाबूगंज शीला देवी, ग्राम प्रधाम कनौजा गुड़िया देवी, ग्राम प्रधान कादीपुर हरिश्चंद्र आदि स्थानीय ग्राम प्रधान व ग्रामीण उपस्थित रहे। ●

राम भजन मलिक एनटीपीसी दर्लिपाली के कार्यकारी निदेशक के पद पर हुए पदोन्नत

राम भजन मलिक 3 मार्च को एनटीपीसी दर्लिपाली के कार्यकारी निदेशक के पद पर पदोन्नत हो गए हैं। उन्होंने एनटीपीसी में अपने करियर की शुरुआत वर्ष 1988 में एक कार्यकारी प्रशिक्षु के रूप में की थी। एनटीपीसी में कार्यकारी प्रशिक्षु से कार्यकारी निदेशक स्तर तक पहुंचने तक का सफर उनके जुनून, प्रतिबद्धता और कड़ी मेहनत को दर्शाता है। वे आईआईटी रुड़की से मैकेनिकल इंजीनियरिंग (बीई) में स्नातकोत्तर हैं।

मलिक का एनटीपीसी में तीन दशकों से अधिक का शानदार सफर रहा है। उन्होने अपने सफर की शुरुवात वर्ष 1988 में की। इसके बाद वे एनटीपीसी की विभिन्न परियोजनाओं (फरक्का, ऊंचाहार, गाडरवारा, खावड़ा) में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहे। मलिक ने 1 सितंबर 2024 को दर्लिपाली परियोजना में परियोजना प्रमुख के रूप में कार्यभार संभाला। इससे पहले वे अक्षय ऊर्जा पार्क - खावड़ा में परियोजना प्रमुख पद पर कार्यरत थे। उनके अपने समृद्ध और विविध अनुभव के साथ, एनटीपीसी दर्लिपाली आने वाले दिनों में नई उपलब्धियां हासिल करेगा। ●

'ब्लू सिटी ऑफ इंडिया'

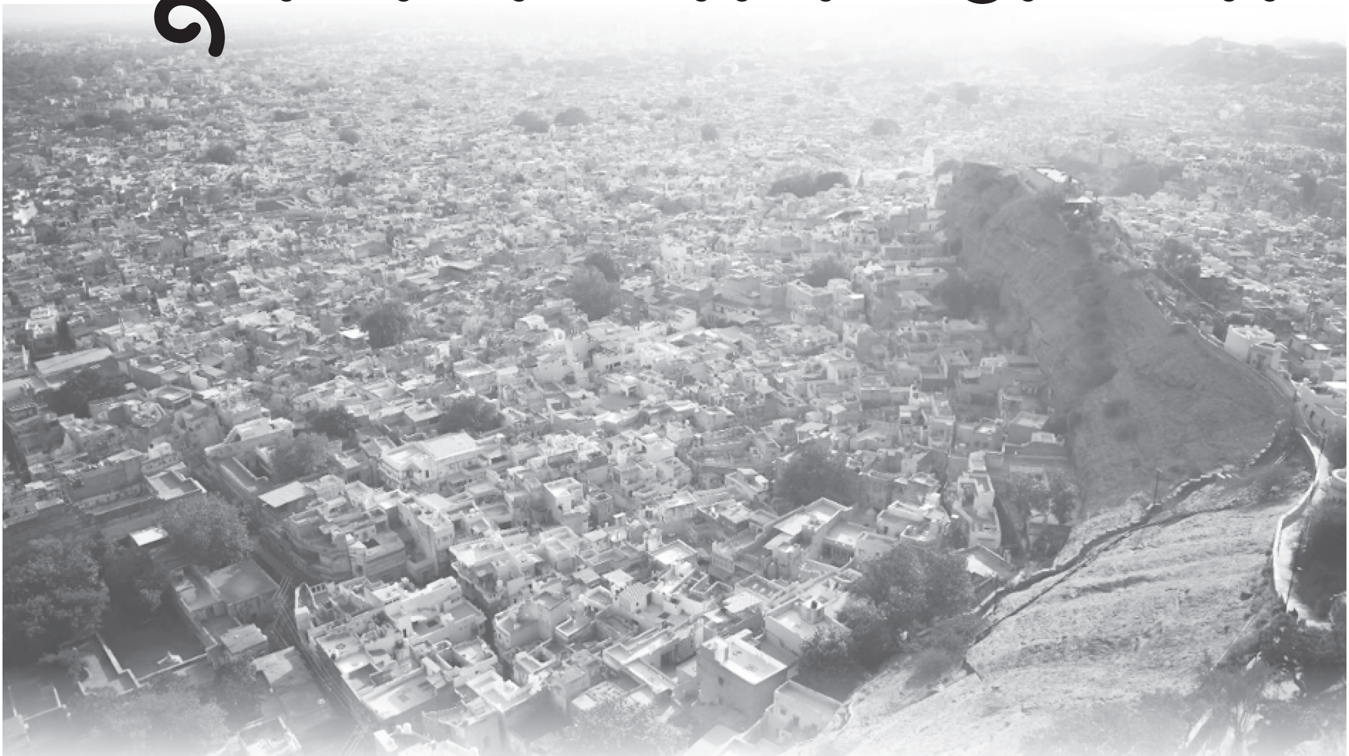

राजस्थान अपनी ऐतिहासिक किले और संस्कृति के लिए जाना जाता है। राजस्थान के दिल में बसा जोधपुर एक ऐसा शहर है, जिसे भारत का 'ब्लू सिटी' के नाम से जाना जाता है। भारत का नीला शहर जोधपुर, राजस्थान राज्य में एक मनमोहक जगह है। यह शहर अपने आकर्षक नीले रंग के घरों के लिए जाना जाता है। जोधपुर शहर इतिहास, संस्कृति और स्थापत्य कला की दृष्टि से समृद्ध है, जिसमें शानदार मेहरानगढ़ किला काफी सुंदर है। राव जोधा द्वारा 1459 में स्थापित जोधपुर, मारवाड़ क्षेत्र की राजधानी के रूप में कार्य किया और राजपूताना इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज यह एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण है और राजसी ठाठ-बाट के लिए नहीं, बल्कि अपनी अनोखी वास्तुकला और नीले रगं के मकान के लिए जाना जाता है।

जोधपुर में घूमने की बेहतरीन जगहें

जोधपुर जिसे 'ब्लू सिटी' और 'सन सिटी' के नाम से भी जाना जाता है, राजस्थान के सबसे आकर्षक स्थलों में से एक है। इस लेख में हम आपको जोधपुर में घूमने के लिए कुछ बेहतरीन जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं।

मेहरानगढ़ किला

यह किली जोधपुर की सबसे लोकप्रिय ऐतिहासिक धरोहरों में से एक है। ऊंची पहाड़ों पर स्थित यह किला पूरे शहर का शानदार नजारा दिखाता है। इस किले में संग्रहालयों हैं और सुंदर नक्काशी को देखकर आप मंत्रमुग्ध हो जाएंगे।

उम्मेद भवन पैलेस

यह एक शानदार महल जो अब एक लक्जरी होटल, संग्रहालय और शाही निवास में गिना जाता है। यह अपनी खूबसूरती के लिए जाना जाता है। इसमें संग्रहालय, शाही परिवार और पुरानी कारों का इतिहास प्रदर्शित किया गया है।

जसवंत थड़ा

संगमरमर से बना यह स्मारक जोधपुर के राजघराने की याद में बनाया गया था। यह अपनी खूबसूरत नक्काशी और अद्भुत वातावरण के लिए जाना जाता है।

मंडोर गार्डन

मंडोर में खूबसूरत उद्यानों, मंदिरों और ऐतिहासिक स्मारकों के साथ ही आराम करने और राजस्थानी विरासत का आनंद लेने के लिए एक शानदार जगह। यह स्थान जोधपुर के इतिहास से जुड़ी कई कहानियां बयां करती है।

सदर बाजार

अगर आप जोधपुर की ट्रेडिशनल कपड़े खरीदना चाहते हैं, तो आप सदर बाजार जा सकते हैं। यहां पर आपको राजस्थानी हस्तशिल्प, कपड़े, गहने और मसाले मिलेंगे। ●

अदरक से पाएं निखरी त्वचा

अदरक को हम सभी अपनी डाइट का हिस्सा जरूर बनाते हैं। लेकिन इसे सिर्फ हेल्थ के लिए ही अच्छा नहीं माना जाता है, बल्कि यह स्किन के लिए भी उतना ही फायदेमंद है। अदरक में एंटी-ऑक्सीडेंट व एंटी-बैक्टीरियल प्रोपर्टीज होती हैं। साथ ही साथ, यह आपकी स्किन को नेचुरली ग्लोइंग इफेक्ट भी देता है।

जब आप अदरक को अपने चेहरे पर इस्तेमाल करती हैं तो इससे आपकी स्किन को अधिक क्लीन व क्लीयर लुक मिलता है। साथ ही साथ, यह उम्र बढ़ने के संकेतों को भी धीमा करता है। हालांकि, जब आप अपने चेहरे पर अदरक का इस्तेमाल करते हैं तो इस दौरान कुछ बातों का ध्यान रखना बेहद जरूरी है। अन्यथा इससे आपको जलन, रेडनेस या स्किन में रूखेपन की शिकायत हो सकती है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको बता रहे हैं कि अदरक को स्किन पर इस्तेमाल करते समय किन-किन बातों का ख्याल रखा जाना चाहिए-

जरूर करें पैच टेस्ट

जब आप अदरक को अपनी स्किन पर इस्तेमाल कर रही हैं तो यह बेहद जरूरी है कि आप पहले पैच टेस्ट जरूर करें। यह थोड़ा तीखा हो सकता है, इसलिए अगर आप इसे सीधे अपनी स्किन पर लगाती हैं तो इससे आपको रेडनेस, खुजली या जलन की शिकायत हो सकती है।

सही तरह से करें डायलूट

अदरक का रस निकालकर अक्सर हम अपनी स्किन लगाते हैं। लेकिन कभी भी कच्चे अदरक के रस को सीधे अपने चेहरे पर न लगाएं। यह बहुत तीखा हो सकता है और आपकी त्वचा को जला या परेशान कर सकता है। इसलिए इसकी इंटेसिटी कम करने आप इसमें शहद, एलोवेरा या दही भी जरूर मिक्स करें।

इसे बहुत देर तक न लगा रहने दें

कई बार लोग सोचते हैं कि अगर अदरक को लंबे समय तक स्किन पर ऐसे ही छोड़ा जाता है तो इससे उसे फायदा होता है। जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। अदरक को आप महज 5-10 मिनट तक ही स्किन पर लगाए रखें। इसे बहुत देर तक लगा रहने देने से जलन या लालिमा भी हो सकती है। अगर आपको किसी तरह की जलन या असुविधा का अहसास होता है, तो इसे तुरंत धो लें।

कहीं खूबसूरती बिगड़ ना दे मुल्तानी मिट्टी

मुल्तानी मिट्टी जिसे फुलर अर्थ के नाम से भी जाना जाता है, यह एक प्राकृतिक मिट्टी है जिसका इस्तेमाल त्वचा की देखभाल में व्यापक रूप से किया जाता है क्योंकि इसमें तेल सोखने, सफाई करने और ठंडक देने के बेहतरीन गुण होते हैं। मैग्नीशियम, सिलिका और कैल्शियम जैसे खनिजों से भरपूर होते हैं, जो सदियों से आयुर्वेदिक और पारंपरिक सौंदर्य उपचारों में एक मुख्य तत्व बन गया है। आज भी घरों में लोग मुल्तानी मिट्टी का फेस पैक जरुर लगाते हैं। मुल्तानी मिट्टी से प्रयोग हम सभी करते हैं, लेकिन कई बार मुल्तानी मिट्टी में ऐसे इंग्रीडिएंट्स मिला देते हैं, जिससे स्किन खराब हो जाती है।

बेकिंग सोडा- कभी भी मुल्तानी मिट्टी का फेस पैक बनाने के लिए उसमें बेकिंग सोडा मिक्स नहीं करना चाहिए। क्योंकि बेकिंग सोडा का पीएच 9 होता है, जो स्किन के लिए अल्कलाइन होता है। इसके प्रयोग से आपकी स्किन बहुत अधिक रूखी व इरिटेड स्किन कर देता है।

नींबू का रस- मुल्तानी मिट्टी फेस पैक बनाते समय नींबू का रस नहीं मिलाना चाहिए। क्योंकि नींबू के रस में पीएच काफी मात्रा में पाया जाता है। जिस कारण से एसिडिक होता है। वहीं, मुल्तानी मिट्टी अल्कलाइन होता है। इसलिए इन दोनों को आपस में ना मिलाएं। वरना आपके चेहरे पर रेडनेस की शिकायत हो सकती है।

चीनी या नमक- जब भी आप घर पर मुल्तानी मिट्टी का स्क्रब बना रहे हैं, तो उसमें चीनी या नमक मिक्स ना करें। यह आपकी स्किन को खराब कर सकती है। आपको रेडनेस और जलन के साथ-साथ प्री-मैच्योर एजिंग की शिकायत हो सकती है।

खेत से थाली तक : पोषण का सफर

भारत की पहचान उसकी मिट्टी और मेहनतकश किसानों से है। हमारे खेतों से निकलने वाला हर दाना सिर्फ़ भोजन नहीं, बल्कि जीवन का पोषण है। 'खेत से थाली तकः पोषण का सफर' एक ऐसी कहानी है जो धरती की गोद से शुरू होकर हमारी सेहत तक पहुँचती है। यह सिर्फ़ अनाज उगाने की बात नहीं, बल्कि यह समझने की यात्रा है कि कैसे खेती हमारे जीवन को पोषित करती है। आइए, इस सफर को और गहराई से जानें, जिसमें मोटे अनाज (मिलेट्स) जैसे बाजरा और रागी की खास भूमिका को भी शामिल करें।

खेतः पोषण की नींव

खेत वह जगह है जहाँ पोषण की जड़ें जमती हैं। गेहूँ, चावल और दालों के साथ-साथ सब्जियाँ और फल हमारे भोजन का आधार हैं। पालक में आयरन, गाजर में विटामिन", और मूंगफली में प्रोटीन जैसे तत्व खेतों से ही आते हैं। लेकिन बीते कुछ दशकों में, ज्यादा पैदावार की चाह में हमने फसलों की पोषण शक्ति को कम आंका। अब वक्त बदल रहा है। खेती को सिर्फ़ पेट भरने का जरिया नहीं, बल्कि सेहत का स्रोत बनाने की जरूरत है। यहाँ मोटे अनाज यानी मिलेट्स की भूमिका अहम हो जाती है, जिन्हें कभी 'गरीबों का अनाज' कहा जाता था, लेकिन आज ये 'सुपरफूड' बन चुके हैं।

मिलेट्सः पोषण का खजाना

मिलेट्स जैसे बाजरा, रागी, ज्वार और कोदो हमारे खेतों की शान हैं। ये न सिर्फ़ पोषक तत्वों से भरपूर हैं, बल्कि कम पानी और कठिन जलवायु में भी उगाए जा सकते हैं। बाजरा में फाइबर और मैग्नीशियम प्रचुर मात्रा में होता है, जो हृदय को स्वस्थ रखता है। रागी कैल्शियम का भंडार है, जो हड्डियों को मजबूत बनाता है और बच्चों के विकास में मदद करता है। ज्वार ग्लूटेन-मुक्त होने के कारण पाचन के लिए बेहतरीन है। संयुक्त राष्ट्र ने 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष' घोषित किया था, जिससे इन अनाजों का महत्व और बढ़ गया। हमारे खेतों से ये मिलेट्स थाली तक पहुँचकर कुपोषण से लड़ने का एक शक्तिशाली हथियार बन सकते हैं।

जैविक खेतीः मिट्टी से थाली तक शुद्धता

जैविक खेती इस सफर का एक और महत्वपूर्ण पड़ाव है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों से मुक्त, यह तरीका मिट्टी को जीवित रखता है और फसलों को पोषक बनाता है। जैविक बाजरा और सब्जियों में एंटीऑक्सिडेंट्स की मात्रा ज्यादा होती है, जो हमें कैंसर और डायबिटीज जैसी बीमारियों से बचाते हैं। यह खेती न सिर्फ़ हमारे शरीर को, बल्कि पर्यावरण को भी पोषण देती है। जब खेतों में शुद्धता होगी, तो थाली में भी वही शुद्धता दिखेगी।

चुनौतियाँः पोषण के रास्ते में रुकावटें

हालांकि खेतों में पोषण तैयार हो रहा है, लेकिन यह हमारी थालियों तक पूरी

तरह नहीं पहुँच पाता। खाद्य प्रसंस्करण में पोषक तत्वों का नुकसान, भंडारण की खराब व्यवस्था, और गलत खाना पकाने की आदतें इसके लिए जिम्मेदार हैं। उदाहरण के लिए, मिलेट्स को अगर जरूरत से ज्यादा पकाया जाए, तो उनका फाइबर और विटामिन कम हो जाता है। इसके अलावा, ग्रामीण इलाकों में गरीबी और जागरूकता की कमी के कारण लोग मिलेट्स और पोषक फसलों का पूरा लाभ नहीं उठा पाते। शहरों में भी फास्ट फूड की बढ़ती लोकप्रियता ने पोषण को पीछे छोड़ दिया है।

समाधानः खेती से थाली तक का बेहतर रास्ता

इस सफर को बेहतर बनाने के लिए कई कदम उठाने होंगे। पहला, मिलेट्स और अन्य पोषक फसलों को बढ़ावा देना। सरकार की योजनाएँ, जैसे 'पोषण अभियान' और 'मिलेट मिशन', इस दिशा में काम कर रही हैं। किसानों को उचित प्रशिक्षण, बीज और बाजार उपलब्ध कराना जरूरी है ताकि वे इन फसलों को अपनाएँ। दूसरा, लोगों को जागरूक करना कि मिलेट्स को अपनी थाली का हिस्सा कैसे बनाया जाए- जैसे रागी की रोटी, बाजरे का खिचड़ा या ज्वार का उपमा। तीसरा, रसोई में सही तरीके अपनाना- कम तेल, कम भूनना और भाप में पकाना, ताकि पोषण बरकरार रहे।

थाली में पोषण, देश में खुशहाली

जब खेतों से मिलेट्स और पोषक फसलें हमारी थालियों तक पहुँचेंगी, तो इसका असर पूरे समाज पर दिखेगा। बच्चे कुपोषण से मुक्त होंगे, महिलाओं में खून की कमी दूर होगी, और बुजुर्ग स्वस्थ रहेंगे। यह सिर्फ़ व्यक्तिगत सेहत की बात नहीं, बल्कि देश की समृद्धि का आधार है। मिलेट्स जैसे अनाज न सिर्फ़ हमें पोषण देते हैं, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने और पर्यावरण को बचाने में भी मदद करते हैं। यह एक ऐसा चक्र है जो खेत से शुरू होकर थाली तक जाता है और फिर समाज को मजबूत करता है।

अंत मेंः हमारी जिम्मेदारी

अगली बार जब आप अपनी थाली सजाएँ, तो जरा सोचें- क्या इसमें खेतों का पूरा पोषण है? एक बाजरे की रोटी, रागी का हलवा, या ज्वार की खिचड़ी शायद उस पोषण को पूरा कर सकती है। यह सफर किसानों की मेहनत से शुरू होता है, लेकिन इसे पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है। सरकार, किसान और हम सब मिलकर इस कहानी को नया मोड़ दे सकते हैं। खेत से थाली तक का यह पोषण का सफर सिर्फ़ भोजन का नहीं, बल्कि एक स्वस्थ और समृद्ध भारत का सपना है। आइए, इसे साकार करें!

डॉ. प्रज्ञा ओझा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, बाँदा

किसानों के लिए डिजिटल तकनीक : कृषि में बदलाव

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां की आधी से अधिक आबादी अपनी आजीविका के लिए खेती पर निर्भर है। लेकिन, पारंपरिक खेती की विधियाँ आज जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की उर्वरता में कमी, बाजार तक पहुँच का अभाव और बढ़ती लागत जैसी चुनौतियों से जूझ रही हैं। ऐसे में, डिजिटल तकनीक एक ऐसी उम्मीद की किरण बनकर उभरी है, जो इन समस्याओं का समाधान करने के साथ-साथ किसानों के जीवन को बेहतर बना सकती है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के इस युग में, आधुनिक तकनीकों का उपयोग खेती को स्मार्ट, टिकाऊ और लाभकारी बना रहा है। आइए, देखें कि डिजिटल तकनीक और इसके आधुनिक उदाहरण किसानों के लिए कैसे क्रांतिकारी बदलाव ला रहे हैं।

डिजिटल तकनीक का अर्थ और महत्व

डिजिटल तकनीक में वे सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और सॉफ्टवेयर शामिल हैं, जो सूचनाओं को संग्रहित, प्रसारित और विश्लेषण करने में मदद करते हैं। इसमें स्मार्टफोन, इंटरनेट, ड्रोन, सेंसर, सैटेलाइट इमेजरी और मोबाइल ऐप्स जैसे उपकरण आते हैं। यह तकनीक किसानों को मौसम की जानकारी, मिट्टी की जाँच, फसल प्रबंधन, बाजार मूल्य और सरकारी योजनाओं तक पहुँच प्रदान करती है, जिससे समय, धन और मेहनत की बचत होती है।

खेती में डिजिटल तकनीक के लाभ और आधुनिक उदाहरण

1. मौसम और जलवायु की सटीक जानकारीः

पहले किसान मौसम का अनुमान लगाने के लिए आसमान या लोक कहावतों पर निर्भर थे। अब, 'मेघदूत' ऐप वास्तविक समय में मौसम की भविष्यवाणी देता है, जो भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) द्वारा संचालित है। इसके अलावा, 'Weather Underground' जैसे प्लेटफॉर्म स्थानीय स्तर पर सटीक डेटा प्रदान करते हैं, जिससे

बुआई और कटाई का सही समय तय करना आसान हो गया है।

2. मिट्टी और फसल का प्रबंधन

आधुनिक तकनीक जैसे 'Soil Health Card' पोर्टल किसानों को उनकी मिट्टी की सेहत का डिजिटल विश्लेषण देता है। साथ ही, ड्रोन जैसे 'DJI Agras T20' का उपयोग करके कीटनाशकों का छिड़काव सटीक और कम खर्चीला हो गया है। सैटेलाइट आधारित 'CropIn' तकनीक फसल की वृद्धि और बीमारियों की निगरानी करती है, जिससे नुकसान को पहले ही रोका जा सकता है।

3. बाजार से सीधा संपर्क

'ई-नाम' (राष्ट्रीय कृषि बाजार) एक ऐसा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है, जो किसानों को अपनी उपज सीधे बेचने की सुविधा देता है। इसके अलावा, 'AgriBazaar' जैसे स्टार्टअप्स डिजिटल मार्केटप्लेस प्रदान करते हैं, जहाँ किसान अपनी फसल की बोली लगा सकते हैं और बिचौलियों से बच सकते हैं।

4. कृषि सलाह और प्रशिक्षण

'किसान कॉल सेंटर' (1800-180-1551) और 'आईएफएफसीओ किसान' ऐप किसानों को मुफ्त सलाह देते हैं। साथ ही, 'Digital Green' नामक पहल वीडियो के जरिए स्थानीय भाषाओं में नई तकनीकों का प्रशिक्षण देती है। उदाहरण के लिए, जैविक खेती के तरीकों पर बनाए गए वीडियो किसानों के बीच लोकप्रिय हैं।

5. स्मार्ट सिंचाई और संसाधन प्रबंधन

'Netafim' जैसी कंपनियों की ड्रिप इरिगेशन सिस्टम सेंसर के साथ काम करती है, जो मिट्टी की नमी के आधार पर पानी की आपूर्ति करती है। इसके अलावा, 'AquaSpy' जैसे उपकरण पानी और उर्वरक के उपयोग को ऑप्टिमाइज़ करते हैं, जिससे संसाधनों की बर्बादी रुकती है।

भारत में डिजिटल क्रांति के उदाहरण

सरकार का 'डिजिटल इंडिया' अभियान ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ा रहा है। 'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना' के लिए ऑनलाइन पंजीकरण और दावा प्रक्रिया शुरू हुई है। स्टार्टअप्स जैसे 'DeHaat' किसानों को बीज, उर्वरक और उपकरण ऑनलाइन ऑर्डर करने की सुविधा दे रहे हैं, जबकि 'Ninjacart' सप्लाई चेन को डिजिटल बनाकर किसानों और खुदरा विक्रेताओं को जोड़ता है।

चुनौतियाँ और समाधान

डिजिटल तकनीक के बावजूद, ग्रामीण क्षेत्रों में धीमा इंटरनेट, तकनीकी ज्ञान की कमी और स्मार्टफोन की अनुपलब्धता चुनौतियाँ हैं। कई किसान इन उपकरणों का उपयोग करने से हिचकते हैं। इसके लिए सरकार को स्थानीय भाषाओं में प्रशिक्षण और जागरूकता अभियान चलाने चाहिए। सस्ते स्मार्टफोन और 5जी नेटवर्क जैसी पहल इन समस्याओं को हल कर सकती हैं।

भविष्य की संभावनाएँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित 'Blue River Technology' जैसी मशीनें खरपतवार और फसल को पहचानकर सटीक कीटनाशक छिड़काव करती हैं। 'Farm-ng' जैसे रोबोट खेत में बुआई और कटाई का काम आसान बना रहे हैं। सैटेलाइट और ड्रोन की मदद से 'Precision Farming' भविष्य में उत्पादन बढ़ाएगी और पर्यावरण को भी बचाएगी।

निष्कर्ष- किसानों के लिए डिजिटल तकनीक और इसके आधुनिक उदाहरण- like CropIn, Netafim, Deewj AgriBazaar-खेती को एक नई दिशा दे रहे हैं। यह किसानों को आत्मनिर्भर बनाती है और उनकी मेहनत का सही मूल्य दिलाती है। जरूरत है इसे हर किसान तक पहुँचाने की–सही संसाधन, सहयोग और जागरूकता के साथ। जब हर खेत में तकनीक का जादू चलेगा, तभी भारत 'डिजिटल कृषि क्रांति' का सच्चा साक्षी बनेगा।

डॉ. पंकज कुमार ओझा
बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा (उ. प्र.)

कमला देवी चटोपाध्याय

(जयंती 3 अप्रैल)

कमला देवी चटोपाध्याय का जन्म कर्नाटक के एक सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने मंगलोर तथा बाद में लंदन के अर्थशास्त्र स्कूल में शिक्षा ग्रहण की। भारत की महान समाज सुधारक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा भारतीय हस्तकला क्षेत्र में नव जागरण लाने वाली गांधीवादी महिला थी। प्रकृति से प्रेम करने वाली कमला देवी आल इण्डिया वीमेन्स कान्फ्रेंस की स्थापना की थी। वह पहली महिला थी जिन्होंने 1920 में चुनाव में नामांकन किया था। गांधी जी के नमक आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन में भी भाग लिया और गिरफ्तार हुई। आजादी के आन्दोलन में चार बार जेल गयी और पांच साल तक जेलों में रहीं। हस्तशिल्प तथा हथकरघा को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने में इनका अहम योगदान रहा। हस्तशिल्पी, बुनकर, जुलाहे, सुनार इनके सामने पगड़ी उतार देते थे क्योंकि उनके हृदय में इनके प्रति मां जैसा सम्मान था। नेशनल स्कूल आफ ड्रामा, संगीत नाटक अकादमी, सेन्ट्रल काटेज इंडस्ट्री और क्राफ्ट कौंसिल आफ इण्डिया इनके प्रयासों से ही स्थापित हुआ। इनकी पुस्तकें द अवर्किंग आफ इण्डियन वोमेन, जापान इट्स बिकनेस एण्ड स्ट्रेन्थ, अंकल सैम अम्पायर आदि आज भी पढ़ी जाती हैं। भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण (1955), पद्मविभूषण (1987) से नवाजा। 1966 में इन्हें रेमन मैग्सेसे और यूनेस्को ने 1977 में हैंडीक्राफ्ट को बढ़ावा देने के लिए नवाजा। संगीत नाटक अकादमी ने फेलोशिप और रत्न सदस्य तथा 1974 में लाइफ टाइम अचीवमेंट से पुरस्कृत किया। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित कमला देवी का निधन 29 अक्टूबर 1985 में हुआ। भारत में नारी आन्दोलन और समाज सुधारक के रुप में इन्हें आज भी याद किया जाता है।

अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’

(जयंती 15 अप्रैल)

अयोध्या सिंह का जन्म आजमगढ़ जिले के निजामाबाद नामक कस्बे में 1865 में हुआ था। इनके पिता भोला सिंह और माता रुक्मिणी देवी थी। अस्वस्थता के कारण स्कूली शिक्षा न लेकर घर पर ही इन्होंने उर्दू, संस्कृत, फारसी, बांग्ला व अंग्रेजी की शिक्षा ली। 1883 में निजामाबाद मिडिल स्कूल में हेड मास्टर हो गये। 1890 में कानूनगो की परीक्षा पास कर कानूनगो बने। 1923 में पद से अवकाश लेने के बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राध्यापक बने। अयोध्या सिंह उपाध्याय खड़ी बोली के पहले कवि माने जाते हैं जिससे इन्हें भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग का महाकाव्यकार भी कहा जाता है। इनके प्रबन्ध काव्य ‘प्रिय प्रवास’ को कवि के रुप में सबसे अधिक ख्याति मिली। हिन्दी कविता के विकास में हरिऔध जी की भूमिका नीव के पत्थर के समान है। एक अमेरिकन ‘एनसाइक्लोपीडिया’ ने इनका परिचय प्रकाशित करते हुए इन्हें विश्व के साहित्य सेवियों की श्रेणी में खड़ा करते हुए लिखा कि खड़ी बोली काव्य के विकास में इनका योगदान निश्चित रुप से बहुत महत्वपूर्ण है यदि प्रिय प्रवास खड़ी बोली का महाकाव्य है तो हरिऔध खड़ी बोली के महाकवि। इनकी अमर काव्य कृतियां 1899 से 1940 तक रसिक रहस्य, प्रेम पुष्पहार, उद्बोधन, कर्मवीर, ऋतु मुकुर, चोखे, चौपदे, वैदेही वनवास आदि आज भी जीवंत हैं। इसके अतिरिक्त अनेक विधाओं में रचित इनके ग्रन्थ, महाकाव्य, मुक्तक काव्य, उपन्यास, नाटक, आलोचना उच्च शिक्षा में आज भी शोध के विषय हैं। 16 मार्च 1947 को अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’ ने 76 वर्ष की आयु में इस दुनिया को अलविदा कह दिया।

ललिता पवार

(जयंती 18 अप्रैल)

ललिता पवार का जन्म 18 अप्रैल 1916 को नासिक के निकट येवले गांव में हुआ था। इनका वास्तविक नाम अंबा लक्ष्मण राव शागुन था। सिनेमा के उद्भव और विकास यात्रा की साक्षी रहीं। इन्होंने स्त्री जीवन के विविध आयामों को पर्दे पर उकेरा और भारतीय सिनेमा की महान कलाकार बनीं। ललिता पवार ने अभिनय की यात्रा का सात दशक लम्बा सफर तय किया। इनकी यादगार फिल्में जंगली की

सख्त मां के रुप में, श्री 420 में केला बेचने वाली, आनन्द की संवेदनशील मातृछवि, अनाड़ी में मिसेज डिसूजा सहित अनेक चरित्रों को भूला नहीं जा सकता। रामानन्द सागर द्वारा निर्मित 'रामायण' में मंथरा की भूमिका ने इनको जन-जन में लोकप्रिय बना दिया। इन्होंने फिल्मों में कैरियर की शुरुआत बाल कलाकार के रुप में आर्यन फिल्म कम्पनी के साथ शुरु की। मूक स्टंट फिल्म 'दिलेर जिगर' इनकी प्रारम्भिक सफलतम फिल्मों में शुमार थी जिसको इनके पति जी.पी. पवार ने निर्देशित किया था। एक दुर्घटना ने इनके चेहरे को बिगाड़ दिया और आंख की रोशनी भी बिगड़ गयी फिर भी इन्होंने हिम्मत नहीं हारा। कई चरित्र प्रधान फिल्में भी इनके कैरियर को निखारा है। इनको अनेक सम्मान और पुरस्कार भी मिले जिसमें फिल्म फेयर पुरस्कार 1959 सहायक अभिनेत्री, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 1961 प्रमुख है। लगभग छः सौ फिल्में देने वाली ललिता पवार का निधन 24 फरवरी 1998 को पुणे में हुआ।

हेमवती नन्दन बहुगुणा

(जयंती 25 अप्रैल)

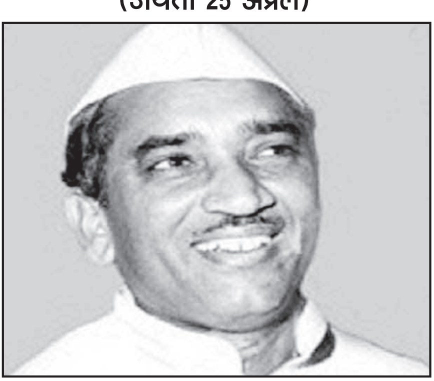

हेमवती नन्दन बहुगुणा का जन्म 25 अप्रैल 1919 को उत्तराखण्ड के बुघाणी गांव में हुआ था। अपने पिता रेवती नंदन बहुगुणा की दूसरी पत्नी के संतान थे। इन्होंने इलाहाबाद विश्व विद्यालय से बीए तक की शिक्षा ग्रहण की थी। देश के महान राजनीतिज्ञ बहुगुणा जी 1952 में उत्तर प्रदेश विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। पुनः 1957 से 1969 तक और 1974 से 1977 तक यूपी विधानसभा के सदस्य रहे। डा. सम्पूर्णानन्द जी के कार्यकाल में मंत्रिमंडल सभा सचिव व मंत्री रहे। दो बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शोभा भी बढ़ाये और 1971, 1977, 1980 में तीन बार लोकसभा के सदस्य के रुप में केन्द्र में पेट्रोलियम, रसायन उर्वरक मंत्री भी रहे। वर्ष 1979 में केन्द्रीय वित्तमंत्री बने। इन्होंने इंग्लैंड, जर्मनी, इटली, फ्रांस आदि देशों की यात्रा कर भारतीय राजनीति को अनेक अनुभव दिये। जानी मानी राजनीतिज्ञ रीता बहुगुणा जोशी इनकी पुत्री हैं जो कांग्रेस में लम्बे समय तक रहने के बाद भाजपा में आयी। वर्तमान में सांसद हैं। पक्ष और विपक्ष दोनों में अपनी पकड़ रखने वाले हेमवती नन्दन बहुगुणा जी का निधन 17 मार्च 1989 को हुआ।

महाशय राजपाल

(पुण्यतिथि 6 अप्रैल)

महाशय राजपाल का जन्म 1885 में अमृतसर में हुआ था इनके पिता लालाराम दास जी बहुत गरीब थे। जब राजपाल बहुत छोटे थे तभी इनके पिता घर छोड़कर निकल गये और उनका अता-पता नहीं चला। उन्होंने किसी तरह मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। नौकरी आसान थी पर वे इसे स्वीकार नहीं किये और किताबत का धंधा शुरु किया। कागज पर सुलेख लिखकर छपाई होती थी उसी को किताबत कहते थे। परिवार के भरण पोषण के लिए इनको बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ता था। पंजाब में उर्दू का प्रभुत्व था। आर्य समाज के प्रति बढ़ती रुचि, संतों की संगत और राष्ट्र प्रेम इनका मुख्य उद्देश्य बन गया था। महाशय राजपाल जी का आर्य पुस्तकालय पुराने पंजाब के आर्यों का संगम स्थल था। इसके अतिरिक्त 1912 में महाशय राजपाल ने

राजपाल एण्ड संस के नाम से प्रकाशन केन्द्र स्थापित किया। भारत के विभाजन के उपरांत लाहौर से यह फर्म 1947 में भारत आ गयी और हिन्दी, उर्दू, पंजाबी भाषाओं में आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक पुस्तकों का प्रकाशन करने लगी। 1920 से 1930 के दशक में भी अनेक पुस्तकें प्रकाशित की गयी थी। इनके द्वारा लिखित क्रान्तिकारियों पर आधारित पुस्तकें जलियावाला बाग का हत्याकांड, कालेपानी की कारावास की कहानी, तारीख-ए-हिन्द जो जब्त की गयी थी से अंग्रेज खासे नाराज थे। आर्य समाजी महाशय राजपाल को कालेपानी की सजा भी हुई थी। हिन्दी में प्रकाशन और हिन्दू धर्म के प्रचारक होने के कारण इनको इल्मदीन नामक एक व्यक्ति ने दुकान पर ही छूरा मारकर हत्या कर दी। रंगीला रसूल के प्रकाशन के बाद इनके ऊपर तीन हमले हुए थे। 6 अप्रैल 1929 को हमला आखिरी था जिसमें ये बच न सके। बाद में इनका परिवार देश विभाजन के बाद दिल्ली आ गया और यहीं पर राजपाल एण्ड सन्स के नाम से प्रकाशन शुरु हुआ।

राहुल सांकृत्यायन

(पुण्यतिथि 14 अप्रैल)

राहुल सांकृत्यायन जी का जन्म 9 अप्रैल 1893 को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में हुआ था। इनका जन्म से नाम केदारनाथ पाण्डेय था। इनका बाल्यजीवन पन्दहां गांव ननिहाल में बीता। इनके नाना पंडित रामशरण पाठक फौज में नौकरी कर

चुके थे जो इनको फौजी जीवन की कहानियां सुनाया करते थे। अजन्ता एलोरा की कहानियां नदियों झरनों के वर्णन इसके अलावा दर्जा तीन की उर्दू में पढ़ा हुआ शेर 'सैर कर दुनिया के गाफिल' इनको दूर देश जाने को प्रेरित करता रहता था। इन्होंने वाराणसी में संस्कृत में अध्ययन किया। फिर आगरा, लाहौर में काम करते-करते कुर्ग में भी रहे। श्रीलंका में 19 माह, तिब्बत में सवा वर्ष, इंग्लैण्ड, यूरोप, जापान आदि देशों की यात्रा की। मजदूर आन्दोलन, सत्याग्रह, भूख हड़ताल के बाद वे महान पर्यटक और अध्येता के रुप में विख्यात हुए। आर्य समाज और बौद्ध धर्म इनके लेखन कर्म का सार बना। इन्होंने लिखा कमर बांध लो भावी घुमक्कड़ों, संसार तुम्हारे स्वागत को तैयार है। राहुल जी की प्रकाशित कृतियां मौलिक, अनुवाद, दर्शन, राजनीति साम्यवाद, यात्रा वृत्तांत, साहित्य और इतिहास, जीवन, कोश, भोजपुरी नाटक, संस्कृत बालपोथी के रुप में दुनिया में पढ़ी जाती है और साहित्य के क्षेत्र में शोध तो निरन्तर किया जाता रहा है। एक कर्मयोद्धा के रुप में महापंडित राहुल सांकृत्यायन को 1958 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1963 में पद्मभूषण सम्मान से भारत सरकार ने नवाजा। जीवन के अंतिम दिनों में स्मृतिलोप होने पर मास्को में इलाज के लिए ले जाया गया। मार्च 1963 में पुनः भारत आये और 14 अप्रैल 1963 को सत्तर वर्ष की आयु में उन्होंने अपने जीवन का अंतिम सफर पूरा किया।

विष्णुकान्त शास्त्री

(पुण्यतिथि 17 अप्रैल)

विष्णुकान्त शास्त्री का जन्म 2 मई 1929 को कोलकाता में हुआ। 1953 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हुए। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के साथ-साथ अनेक पदों पर रहे। हिन्दी साहित्य के बड़े विद्वान और कुशल, ईमानदार राजनेता के रुप में भी इनकी छवि थी। बनारस से इनका गहरा नाता था। इन्होंने देशभर के विश्वविद्यालयों एवं साहित्यिक संस्थानों में व्याख्यान दिया। इन्होंने अनेक पुस्तकों का लेखन और सम्पादन किया जिसमें कवि निराला की वेदना तथा निबन्ध, ज्ञान और धर्म, अनन्त पथ के यात्री धर्मवीर भारती, महात्मा गांधी का समाज दर्शन आदि प्रमुख है। सरकार ने इन्हें हिन्दी के क्षेत्र में अनेक संस्थानों में परामर्श हेतु

नियुक्त भी किया। 1977 में ये जनता पार्टी से पश्चिम बंगाल में विधायक बने। 1992-1998 में राज्यसभा सदस्य रहे। अनेक देशों की यात्रा कर देश और दुनिया की संस्कृति का गहरा अध्ययन भी किया। 2 दिसम्बर 1999 को हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल फिर 24 नवम्बर 2000 को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल नियुक्त हुए और 2004 तक इस पद पर कार्यरत रहे। इस दौरान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर ने इन्हें डी.लिट की उपाधि से नवाजा। शास्त्री जी को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार 1972-73 में उप्र राज्य साहित्यिक पुरस्कार (1974-75) में प्रदान किया गया था। इसके अतिरिक्त अनेक पुरस्कार प्रदान किये थे। अन्ततः 17 अप्रैल 2005 में इनका निधन हो गया। इनकी एक पुत्री भारती शर्मा हैं।

चुनी गोस्वामी

(पुण्यतिथि 30 अप्रैल)

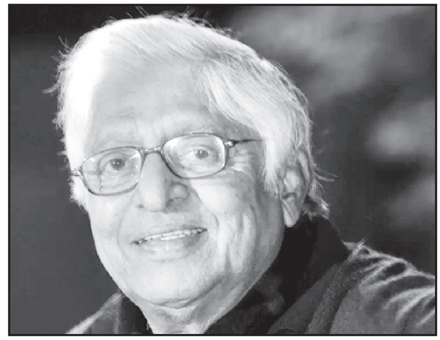

चुनी गोस्वामी का जन्म दक्षिण कोलकाता के किशोरगंज में 15 जनवरी 1938 को हुआ था। इनका असली नाम सुविमल गोस्वामी था। भारतीय फुटबाल के स्वर्ण युग में चुनी गोस्वामी स्ट्राइकर पोजीशन पर खेलते रहे। स्कूल में इनके कोच शिवदास बनर्जी थे। 17 वर्ष की उम्र में चुनी गोस्वामी ने 1955 में संतोष ट्राफी की ओर से खेला और बंगाल टीम ने मैसूर टीम को हराकर चैम्पियनशिप जीत ली। 1956 में वे भारत की ओलम्पिक टीम के सदस्य रहे। इनकी टीम ने चीन को 1-0 से हराया। बंगाल टीम के कप्तान के रुप में 1957 में आल इण्डिया यूनिवर्सिटी फुटबाल चैम्पियनशिप में भाग लिया और मुम्बई टीम को 1-0 से हराया। 1962 जकार्ता में एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता। तेल अवीव एशियाई कप में रजत पदक जीतने वाली भारतीय टीम के कप्तान रहे। 1963 में इन्हें अर्जुन पुरस्कार से नवाजा गया। भारत सरकार ने पुनः 1983 में पद्मश्री से पुरस्कृत किया। 1986 से 1989 तक झारखंड में टाटा फुटबाल अकादमी के डायरेक्टर रहे। 2005 में कोलकाता कारपोरेशन के शेरिफ बने और मोहन बागान रत्न चुने गये। महान फुटबालर और प्रथम श्रेणी के क्रिकेटर चुनी गोस्वामी का निधन 30 अप्रैल 2020 को कोलकाता में दिल का दौरा पड़ने से हुआ। इन्होंने भारत के लिए बतौर फुटबालर 1956 से 1964 तक पचास मैच खेले। खेल प्रेमियों के दिलों में चुनी दा सदैव प्रेरणाश्रोत बनकर जीवित रहेंगे।

अप्रैल मास का राशिफल

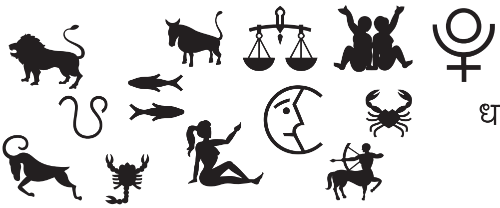

पं0 राम कृपाल शुक्ल

धर्मशास्त्राचार्य, पुराणेतिहासाचार्य एवं कर्मकाण्ड कोविद

मो. 9415820597

मेष- आपके लिए यह माह अच्छा है। सभी दिशाओं में प्रगति होगी। अन्न, धन, वस्त्र, आभूषण का आगम बन सकता है। रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। शत्रु पराजित होंगे और मित्रों का सहयोग मिलेगा। सम्पूर्ण माह रोगमुक्त रहेंगे। चित्त प्रसन्न रहेगा। जनसम्पर्क से लाभ होगा। दिनांक 13, 19, 23, 29 नेष्ट हैं।

वृष- आपके लिए यह माह ठीक-ठाक है। सामान्य प्रगति का योग है। परिवार के लोगों का साथ मिलेगा। माह पर्यन्त मनोरंजक वातावरण रहेगा। समय सुगम प्रतीत होगा। किसी अच्छे व्यक्ति से सम्पर्क होगा जो भविष्य में लाभदायक सिद्ध होगा। माह के दूसरे सप्ताह से भाग्य साथ देने लगेगा, फिर भी कुछ उतार-चढ़ाव रहेगा। दिनांक 8, 12, 14, 18 नेष्ट हैं।

मिथुन- आपके यह माह सामान्य है। सफलता के लिए विशेष श्रम करना पड़ेगा। सामान्य लाभ का योग है। श्रेष्ठजन सहायक बनेंगे और आपका मार्गदर्शन करेंगे। लम्बे समय से बनी निराशा की मनःस्थिति में कमी आयेगी। श्रम का लाभ मिलेगा। व्यापार मन्दा रहेगा। साहस बनाए रखने की जरुरत है। विद्यार्थियों के लिए माह अच्छा रहेगा। प्रयत्न करते रहे। दिनांक 3, 10, 27, 29 नेष्ट हैं।

कर्क- आपके लिए माह अच्छा है। नियमित लाभ का योग बन रहा है। सोचे हुए कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परेशानियां कम होंगी। विविध आर्थिक योजनाएं बनेंगी। शत्रु पक्ष कमजोर पड़ेगा। भाग्य और कर्म के संयोग से सफलता सुनिश्चित है। आपका प्रत्येक कार्य बनेगा। पारिवारिक सुख मिलेगा। धन प्राप्ति होगी। विघ्न-बाधाएं टलती जाएंगी। मित्र अनुकूल रहेंगे। राजनेताओं के लिए समय अच्छा है। दिनांक 9, 18, 27 नेष्ट हैं।

सिंह- आपके लिए यह माह सामान्य है। किसी अनजानी समस्या का सामना करना पड़ सकता है। व्यर्थ की चर्चा में समय बीत सकता है। विवादों से नुकसान उठाना पड़ेगा। आपकी रुचि उपभोक्ता वस्तुओं में बढ़ेगी जिसके कारण धन खर्च होगा। परिवार में मौसमी रोगों के कारण परेशानी हो सकती है। कुछ नए सम्पर्क भी बन सकते हैं जो भविष्य में सहायक सिद्ध होंगे। व्यापार में लाभ बढ़ेगा। दिनांक 4, 10, 20, 29 नेष्ट हैं।

कन्या- आपके लिए माह मध्यम है। मानसिक रुप से अशांत रहने का योग है। स्पष्ट है कि कठिनाइयां रहेंगी। किन्तु धीरे-धीरे सब सामान्य हो जायेगा। पहले से चली आ रही चिन्ताएँ कम होंगी। दुविधाएँ समाप्त होंगी। पारिवारिक सदस्यों के कारण भाग-दौड़ लगी रहेगी। भविष्य को लेकर चिन्ता बढ़ेगी। बुजुर्गों को स्वास्थ्य की परेशानी हो सकती है। समारात्मक सोच बनाए रखें। दिनांक 2, 10, 20, 29 नेष्ट हैं।

तुला- आपके लिए यह माह सामान्य है। अप्रत्याशित लाभ का योग बन रहा है। दाम्पत्य जीवन सुखमय होने के आसार हैं। विवादों से बचना होगा ताकि मानसिक शान्ति बनी रहे। कुछ निराशा करने वाले समावार मिल सकते हैं। उद्योग से जुड़े व्यक्तियों को लाभ मिलेगा। व्यापारिक उन्नति होगी। सामान्यतः व्यय में वृद्धि होगी। आय में भी वृद्धि का समय है। दिनांक 3, 10, 19, 29 नेष्ट हैं।

वृश्चिक- आपका यह माह मध्यम है। मासान्त तक समस्याओं के निराकरण का योग है और फिर प्रशंसा भी प्राप्त होगी। सट्टा लगाने और शेयर खरीदने से बचें। घर बाहर स्थितियाँ संघर्षपूर्ण हैं। धैर्य से काम निकालना होगा। शारीरिक पीड़ा और मानसिक ग्लानि दोनों के शिकार हो सकते हैं।व्यापार करने वाले सतर्कता से काम करें। दिनांक 2, 12, 22 नेष्ट हैं।

धनु- आपका यह माह मिलाजुला है। रोगों का आक्रमण हो सकता है। ज्वर, श्वांस, कफ से परेशान हो सकते हैं। सहयोगी कम मददगार होंगे। विरोधों और अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है। कठोर वचन सहने का समय है। आत्मचिन्तन करना चाहिए। यात्रा से लाभ का योग है। संयम से असुविधाएँ दूर होंगी। विद्यार्थियों के लिए सफलता का योग है। दिनांक 2, 9, 13, 19 नेष्ट हैं।

मकर- आपका यह माह मध्यम है। शनि की साढ़ेसाती चल रही है। हर क्षेत्र में कठिनाइयाँ हैं। चित्त में अस्थिरता और कमजोरी बनी रह सकती है। पारिवारिक सुख शान्ति प्रभावित है। कष्ट और तनाव घेरे रहेंगे। शत्रु बाधा प्रबल है। रोगों में कफ, श्वांस, बुखार का आक्रमण हो सकता है। दिनचर्या प्रभावित रहेगी। विवादों से बचें। धैर्य बनाए रहें। उतार-चढ़ाव से घबराएँ नहीं, लाभ होगा। दिनांक 6, 16, 27, 30 नेष्ट हैं।

कुम्भ- आपका यह माह ठीक-ठाक है। दौड़-धूप अधिक हो सकती है। जिससे थकान का अनुभव करेंगे। पारिवारिक सहयोग बना रहेगा और इससे आपको प्रसन्नता मिलेगी। आपकी राशि पर शनि की साढ़ेसाती है। शनि देव कृपालु रहेंगे। सोच विचार में आध्यात्मिकता रहेगी। आर्थिक लाभ का समय है। रहन सहन ऊँचा होगा। प्रयत्न कामयाब रहेंगे। दिनांक 5, 18, 25 नेष्ट हैं।

मीन- आपका यह माह मिला जुला है। कुछ बाधाएँ हैं जो कुछ सुविधाएं हैं। माह पर्यन्त दौड़ धूप बनी रह सकती है। शिर रोग, नेत्र रोग पीड़ित कर सकते हैं। थकान कष्ट देगी किन्तु पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। गृहस्थी के दायित्व पूरा करेंगे। अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। कुछ प्रयत्न विफल हो सकते हैं। दिनांक 3, 12, 22, 28 नेष्ट हैं। ●

जीवन में आध्यात्म का महत्व

आध्यात्म मानव जीवन का एक ऐसा आधारभूत पहलू है, जो हमें न केवल अपनी भीतरी शांति और आत्मिक संतुष्टि की ओर ले जाता है, बल्कि जीवन के गहरे उद्देश्य और अर्थ को समझने में भी सहायता करता है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में, जहाँ भौतिक सुख-सुविधाओं और सफलता की चाह ने इंसान को अपने मूल स्वरूप से दूर कर दिया है, आध्यात्म एक प्रकाशस्तंभ की तरह कार्य करता है जो हमें सही मार्ग दिखाता है। यह वह विज्ञान है जो बाहरी दुनिया से हटकर भीतर की यात्रा पर जोर देता है और हमें आत्म-जागरूकता की ओर ले जाता है।

आध्यात्म क्या है?

आध्यात्म को सरल शब्दों में आत्मा की खोज के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने भौतिक शरीर और मन से परे जाकर अपने शाश्वत स्वरूपकृअर्थात् आत्माकृको पहचानने का प्रयास करता है। हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, 'आत्मा न जन्म लेती है, न मरती हैय यह शाश्वत और अविनाशी है।' आध्यात्म हमें यह सिखाता है कि हमारा असली अस्तित्व इस नश्वर शरीर से कहीं अधिक गहरा और व्यापक है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवन शैली है जो हमें संतुलन, संयम और सच्चाई की ओर ले जाती है।

जीवन में आध्यात्म का महत्व

आध्यात्म का महत्व जीवन के हर क्षेत्र में देखा जा सकता है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों को भी मजबूत करता है। आइए इसके कुछ प्रमुख पहलुओं पर विस्तार से विचार करेंरू

1. मानसिक शांति और तनाव मुक्ति

आज के युग में तनाव और चिंता मानव जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं। नौकरी, परिवार और सामाजिक दबावों के बीच व्यक्ति अक्सर अपने मन की शांति खो देता है। आध्यात्मिक प्रथाएँ जैसे योग, ध्यान और प्रार्थना हमें इन तनावों से मुक्ति दिलाने

में मदद करती हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है, 'योगस्थ कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय' (अध्याय 2, श्लोक 48), अर्थात् कर्म करते समय मन को योग में स्थिर रखें और आसक्ति छोड़ दें। यह सिखाता है कि जब हम अपने कर्तव्यों को निस्वार्थ भाव से करते हैं, तो हमारा मन शांत और स्थिर रहता है।

2. आत्म-ज्ञान और आत्म-विकास

आध्यात्म हमें स्वयं को जानने का अवसर देता है। हम कौन हैं, हमारा उद्देश्य क्या है, और जीवन का असली लक्ष्य क्या हैकृइन सवालों का जवाब आध्यात्मिक चिंतन से ही मिलता है। गीता में एक श्लोक है, 'आत्मैव ह्यात्मनो बंधुरात्मैव रिपुरात्मनरू' (अध्याय 6, श्लोक 5), जिसका अर्थ है कि आत्मा ही मनुष्य का मित्र है और आत्मा ही उसका शत्रु भी। जब हम अपने मन को नियंत्रित करते हैं और सकारात्मक दिशा में ले जाते हैं, तो हम आत्म-विकास की ओर बढ़ते हैं। यह आत्म-ज्ञान हमें अपने व्यक्तित्व को निखारने और जीवन में संतुलन बनाए रखने में सहायता करता है।

3. नैतिकता और मूल्यों का विकास

आध्यात्म हमें नैतिकता और मूल्यों का पाठ पढ़ाता है। यह हमें सिखाता है कि जीवन में कर्मों का महत्व है, न कि केवल उनके परिणामों का। गीता का प्रसिद्ध श्लोक, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' (अध्याय 2, श्लोक 47), यह संदेश देता है कि हमें अपने कर्तव्यों पर ध्यान देना चाहिए, फल की चिंता किए बिना। यह दृष्टिकोण हमें ईमानदारी, निष्ठा और धैर्य जैसे गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है, जो एक नैतिक जीवन का आधार हैं।

4. सामाजिक संबंधों में सुधार

आध्यात्मिकता हमें यह सिखाती है कि सभी प्राणी एक ही परमात्मा का अंश हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता जैसे ग्रंथ हमें यह समझाते हैं कि कर्म, ज्ञान और भक्ति के माध्यम से हम अपने जीवन को उच्च स्तर पर ले जा सकते हैं। आध्यात्म वह दर्पण है जो हमें हमारा असली स्वरूप दिखाता है और उस राह पर चलने की प्रेरणा देता है जो हमें परम सत्य और शांति की ओर ले जाती है। इसलिए, हमें अपने व्यस्त जीवन में आध्यात्म को स्थान देना चाहिए ताकि हम न केवल स्वयं के लिए, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक सकारात्मक बदलाव ला सकें।

गीता में भगवान कहते हैं, 'समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियरू' (अध्याय 9, श्लोक 29), अर्थात् मैं सभी प्राणियों के प्रति समान हूँ, मेरा कोई शत्रु नहीं, न कोई प्रिय। इस भावना को अपनाकर हम अपने सामाजिक संबंधों में प्रेम, करुणा और समानता ला सकते हैं। यह हमें दूसरों के प्रति सहानुभूति और सम्मान की भावना विकसित करने में मदद करता है।

5. भौतिकता से ऊपर उठना

आज का समाज भौतिक सुखों की ओर अंधाधुंध दौड़ रहा है, लेकिन आध्यात्म हमें सिखाता है कि ये सुख क्षणिक हैं। गीता कहती है, 'ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते' (अध्याय 5, श्लोक 22), अर्थात् इंद्रियों से उत्पन्न सुख अंततः दुख का कारण बनते हैं। आध्यात्मिक दृष्टिकोण हमें यह समझाता है कि सच्ची खुशी बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि आत्मिक संतोष में निहित है।

6. मृत्यु के भय से मुक्ति

मृत्यु का भय हर इंसान को सताता है, लेकिन आध्यात्म इस भय को दूर करने का मार्ग दिखाता है। गीता में कहा गया है, 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च' (अध्याय 2, श्लोक 27), अर्थात् जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है और जो मरा है उसका जन्म भी निश्चित है। यह चक्र प्रकृति का नियम है। इस सत्य को समझकर हम मृत्यु को स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करते हैं और उससे डरना छोड़ देते हैं।

आध्यात्म का व्यावहारिक पक्ष

आध्यात्म केवल सैद्धांतिक नहीं है, बल्कि यह जीवन में व्यावहारिक रूप से लागू किया जा सकता है। रोजाना कुछ समय ध्यान के लिए निकालना, प्रकृति के साथ जुड़ना, दूसरों की सेवा करना और सकारात्मक सोच रखनाकृये सभी आध्यात्मिक जीवन के हिस्से हैं। यह हमें न केवल अपने लिए, बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी बेहतर इंसान बनाता है।

निष्कर्ष

जीवन में आध्यात्म का महत्व अनमोल है। यह हमें एक सार्थक, संतुलित और शांतिपूर्ण जीवन जीने की कला सिखाता है। श्रीमद्भगवद्गीता जैसे ग्रंथ हमें यह समझाते हैं कि कर्म, ज्ञान और भक्ति के माध्यम से हम अपने जीवन को उच्च स्तर पर ले जा सकते हैं। आध्यात्म वह दर्पण है जो हमें हमारा असली स्वरूप दिखाता है और उस राह पर चलने की प्रेरणा देता है जो हमें परम सत्य और शांति की ओर ले जाती है। इसलिए, हमें अपने व्यस्त जीवन में आध्यात्म को स्थान देना चाहिए ताकि हम न केवल स्वयं के लिए, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक सकारात्मक बदलाव ला सकें।

ज्योति
अध्यापिका
तुलसी विद्या निकेतन, वाराणसी

हार्दिक पांड्या नं. 1 टी-20 ऑलराउंडर

भारत के ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या ने अपना नंबर 1 टी20 ऑलराउंडर स्थान बरकरार रखा है, जबकि अभिषेक शर्मा, नंबर 2 टी20 बल्लेबाज, और वरुण चक्रवर्ती, नंबर 2 टी20 गेंदबाज ने भी आईसीसी पुरुष टी20 रैंकिंग में अपना स्थान हासिल किया है। न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज जैकब डफी ने आईसीसी पुरुष टी20 गेंदबाजी रैंकिंग में महत्वपूर्ण छलांग लगाई है, जो चल रही पांच मैचों की श्रृंखला में पाकिस्तान के खिलाफ अपने शानदार प्रदर्शन के बाद पहली बार शीर्ष पांच में शामिल हुए हैं।

डफी माउंट माउंगानुई में 4/20 और ऑकलैंड में पिछले मैच में 1/37 के प्रभावशाली प्रदर्शन की बदौलत नवीनतम रैंकिंग अपडेट में सात पायदान चढ़कर पांचवें स्थान पर पहुंच गए हैं। न्यूजीलैंड की पाकिस्तान पर 115 रनों की शानदार जीत में उनके योगदान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिससे सीरीज में 3-1 की बढ़त हासिल हुई। डफी न्यूजीलैंड के एकमात्र गेंदबाज नहीं हैं, जिनकी रैंकिंग में उछाल आया है। माउंट माउंगानुई में 3/25 के आंकड़े के साथ उनका साथ देने वाले जकारी फाउलकेस ने 26 पायदान की छलांग लगाकर 64वां स्थान हासिल किया है।इस बीच, पाकिस्तान के हारिस राउफ ने भी महत्वपूर्ण प्रगति की है, पिछले दो मैचों में से प्रत्येक में तीन विकेट लेने के बाद 11 पायदान ऊपर चढ़कर 15वें स्थान पर पहुंच गए हैं। सीरीज में अपने लगातार प्रदर्शन के बाद अब्बास अफरीदी अपने करियर के सर्वश्रेष्ठ 36वें स्थान पर पहुंच गए हैं।नवीनतम रैंकिंग अपडेट में कई बल्लेबाजों ने भी महत्वपूर्ण लाभ हासिल किया है। माउंट माउंगानुई में 20 गेंदों में 50 रन बनाने वाले न्यूजीलैंड के फिन एलन दो पायदान ऊपर चढ़कर 16वें स्थान पर पहुंच गए हैं। उनके साथी मार्क चैपमैन ने ऑकलैंड में 94 रनों की शानदार पारी खेलकर 51वें से 41वें स्थान पर पहुंचकर और भी बड़ी छलांग लगाई है।पाकिस्तान के लिए युवा बल्लेबाज हसन नवाज ने ऑकलैंड में नाबाद 105 रनों की पारी खेलकर 77वें स्थान पर पहुंचकर बड़ा प्रभाव डाला है। ●

क्लब विश्व कप 2025 के लिए 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि की घोषणा

फीफा ने अपनी नई क्लब प्रतियोगिता के लिए वितरण मॉडल की पुष्टि की है, जिसमें 32 भाग लेने वाले क्लबों के लिए 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि, साथ ही एक पर्याप्त और अभूतपूर्व वैश्विक एकजुटता मॉडल शामिल है। टूर्नामेंट का विजेता 125 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक कमा सकता है। ग्रुप स्टेज में प्रतिस्पर्धा करने वाली टीमें छह ग्रुप मैच में प्रत्येक जीत के लिए 2 मिलियन अमेरिकी डॉलर और ड्रॉ के लिए 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर कमाएंगी। जैसे-जैसे क्लब नॉकआउट राउंड में आगे बढ़ते हैं, वित्तीय पुरस्कार काफी बढ़ जाते हैं, राउंड ऑफ 16 में अतिरिक्त 7.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर की कमाई होती है, क्वार्टर फाइनल में 13.125 मिलियन अमेरिकी डॉलर, सेमीफाइनल में 21 मिलियन अमेरिकी डॉलर और फाइनलिस्ट को 30 मिलियन अमेरिकी डॉलर मिलते हैं। टूर्नामेंट के विजेता को 40 मिलियन अमेरिकी डॉलर की प्रभावशाली राशि मिलेगी। ●

मेरा करियर उतार-चढ़ाव से भरा रहा : शरवरी वाघ

अभिनेत्री शरवरी अभिनय के क्षेत्र में पांच साल का समय बिता चुकी हैं। इस दौरान उन्होंने कई शानदार फिल्में दीं। वाघ ने न्यूज एजेंसी से बात की। उन्होंने बताया कि उनका सफर उतार-चढ़ाव से भरा रहा है।शरवरी ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत 'द फॉरगॉटन आर्मी - आजादी के लिए' वेब सीरीज से की थी, जिसमें उनके साथ सनी कौशल मुख्य भूमिका में थे। इसके बाद वह 'बंटी और बबली 2' में नजर आईं। धीमी शुरुआत के बाद अभिनेत्री 'मुंज्या', 'महाराज' और 'वेदा' जैसी हिट फिल्मों में काम कीं, जिन्हें काफी पसंद किया गया।

शरवरी ने बताया, 'मैं अपने सफर के लिए आभारी हूं, जो उतार-चढ़ाव से भरा रहा है। मैंने हर दिन कुछ नया सीखा है। मुझे लगता है कि यह शुरुआत है। मुझे लंबा सफर तय करना है।' शिव रवैल के निर्देशन में तैयार अपकमिंग फिल्म 'अल्फा' में शरवरी वाघ अभिनेत्री आलिया भट्ट के साथ नजर आएंगी।

कैट फूड शिबा के कैंपेन लॉन्च कार्यक्रम में हिस्सा लेने नई दिल्ली पहुंची शरवरी ने आलिया के साथ काम करने का अपना अनुभव भी साझा किया। शरवरी ने कहा, 'आलिया शानदार अभिनेत्री के साथ ही शानदार इंसान भी हैं और फिल्म में काम कर मुझे जो सबसे बड़ा फायदा मिला, यह था कि मुझे उनसे सीखने को मिला।' उन्होंने कहा, 'मुझे हर दिन सेट पर उनके साथ रहना एक मास्टर क्लास की तरह लगता था। मैंने उनसे जो कुछ भी सीखा है, उसे मैं अपने अगले हर प्रोजेक्ट में लागू करूंगी। मैं आलिया के साथ काम करने का यह अवसर पाकर आभारी हूं।' शरवरी की अपकमिंग फिल्म 'अल्फा' के बारे में बता दें कि यह यशराज फिल्म्स की स्पाई यूनिवर्स की सातवीं फिल्म है। इसकी शुरुआत सलमान खान और कैटरीना कैफ की फिल्म 'टाइगर' फ्रैंचाइज से हुई, पहले 'एक था टाइगर' और उसके बाद 'टाइगर जिंदा है' आई। इसके बाद 'वॉर', 'पठान' और 'टाइगर 3' के साथ एक्शन और रोमांच का सफर जारी है। फ्रैंचाइज की आने वाली फिल्मों में अयान मुखर्जी के निर्देशन में तैयार 'वॉर 2', 'पठान 2' और 'टाइगर बनाम पठान' शामिल हैं। 'अल्फा' क्रिसमस के अवसर पर सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

अभिषेक हॉस्पिटल
वार्ड नं. 5 लोकमान्य तिलक नगर, सकलडीहा रोड
चंदौली, उप्र- 232104 मो.- 9415224892
Dr. Sanjay Kumar
Director/Chairman
अभिषेक फार्मेसी कालेज
Approved by- AICTE, PCI, Affiliated by B.T.E. Lucknow
ABHISHEK PHARMACY COLLEGE
APC
Chandauli (U.P.)
अभिषेक नर्सिंग एण्ड
पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट
A.N.M.
G.N.M.
O.T. TECHNICIAN
ADMISSION OPEN
अभिषेक नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल इंस्टिट्यूट
अभिषेक हॉस्पिटल
हॉस्पिटल में स्वास्थ्य सेवाओं एवं इंस्टीट्यूट में प्रवेश हेतु
सम्पर्क करें- 8756911665, 9415293257, 9514224892

Quality through Technology & Innovation

D.K. Singh
Managing Director

Kamlesh Tiwari
Manager

Mr. D.K. Singh **Mob. 9793566999**

Excel Pharmaceuticals

B.O. Plot No. 147, Phase-1, Chandigarh
E-mail : excelpharma.singh@gmail.com, www.excelpharmaceuticals.com